प्रकाशक—

घ-साहित्य मण्डल लि०, अजमेर.

मूल्य ।=) आने

ओ३म्

प्रस्तावना

देश की एकता के लिए धर्म और समाज का मिलना उतना ही ज़रूरी है जितना कि दीपक के प्रकाश को जारी रखने के लिए बत्ती के साथ तेल होता है। जिन देशों में धर्म और राष्ट्र न्यारी न्यारी वस्तु समझी जाती है वहां धार्मिक सम्प्रदायों के भेद से राष्ट्रीय संगठन मे बाधा नहीं पड़ती, क्योंकि धर्म का प्रभाव व्यक्तिगत समझा जाता है परन्तु जहां धर्म ही को राष्ट्र की मुख्य शक्ति माना जाय वहां धार्मिक सम्प्रदायों की फूट से राष्ट्र में निर्बलता आये बिना नहीं रहती। रूस, जापान के युद्ध मे विदेश में रहने वाले जापानी ईसाई भी मातृभूमि की रक्षा और मान के लिए जापान चले आये थे, यद्यपि जापान का युद्ध ईसाई बादशाह के साथ था। यह हिन्दुस्तानियों का दुर्भाग्य है कि यहां धर्म ही को राष्ट्र माना जाता है। हिन्दुस्तान पर विदेशी आक्रमण अधिक रूप में इस कारण से हुए कि हिन्दुओं की शक्ति धार्मिक फूट के कारण संगठित नहीं हो सकी, उलटा एक संप्रदाय ने दूसरे के विरुद्ध शत्रु को सहायता दी. हिन्दुस्तान राष्ट्र का रूप इस कारण नहीं धार सकता कि हिन्दू मुसलमानों के विचारों में दिन रात का अन्तर है. यद्यपि मुसलमान भाई हिन्दुस्तानमें ही जन्मते और मरते हैं और यहीं के अन्न और जल से इनका पालन पोषण होता है तथापि वे हिन्दुस्तान के सुख दुःख और हानि लाभ को न देखकर अरब और टर्की इत्यादि के गीत गाते हैं इसका मुख्य कारण यह है कि मुसलमान अपने विदेशी धर्म भाईयों की सहायता से खोई हुई शक्ति प्राप्त करना चाहते हैं। हिन्दू नेताओं ने बहुत कुछ चेष्टा इस बात की की, कि हिन्दू मुसलमान भाई भाई की तरह रहें परन्तु सफलता प्राप्त नहीं हुई। वर्त्तमान अवस्था में जो सहायता हिन्दुओं ने तन मन और धन से खिलाफ़त उद्धार के निमित्त मुसलमानों को दी वह

किसी से छिपी नहीं है, साथ ही उसका जो कुछ बदला मुसलमानों ने हिन्दुओं को मलाबार, मुल्तान, सहारनपुर, अजमेर और दिल्ली इत्यादि में दिया उसको भी सब जानते हैं। हिन्दुओं को भलाई इसी में है कि मुसमानों की मित्रता से स्वराज्य प्राप्ति का स्वप्न देखना छोड़दें और सरकार अंग्रेजी की सहायता से अपनी पिंड पिंड शक्ति को संगठित करके रक्षा का उपाय ढूंढे जो संगठन और शुद्धि को छोड़ कर दूसरे काम में दिखाई नहीं देती। साथ ही उन हिन्दुओं को त्यागदें कि जो बाहर से हिन्दू बने हुए अन्तःकरण से मुसलमान हैं। बहुत से नवयुवक हिन्दू, मुसलमान मौलवियों की बात में आकार पवित्र आर्यधर्म से भ्रष्ट हो जाते हैं इस का मुख्य कारण यह है कि वे न तो अपने धर्म को जानते हैं और न उनको इस्लाम धर्म का ज्ञान है, इस अभाव को दूर करने के लिये मैंने इस्लाम धर्म की समीक्षा नामक पुस्तक प्रश्नोत्तर के रूप में लिखी है जिस का यह अभिप्राय है कि हिन्दू इस्लाम धर्म की बातों को समझ कर अपने देश और धर्म की रक्षा करसकें। यदि हिन्दू भाइयों में से एक की भी रक्षा इस पुस्तक पढ़ने से होगई तो मैं अपने मनोरथ को सफल मानलूंगा। हिन्दुओं को चाहिये कि परस्पर एक दूसरे की निन्दा न करें और सब मिलकर कर एक दूसरे को सहायता देते रहें। यह बात ध्यान में रखनी चाहिये कि जैन, बौद्ध, सिक्ख और आर्यसमाज इत्यादि एक दूसरे से पृथक् नहीं हैं।

ओ३म् शान्ति ! शान्ति !! शान्ति !!!

रतनगढ़
१९-४-२४.

गणपतिराय अग्रवाल,

परिचय

इस समय संसार में सैकड़ों नहीं हज़ारों मत मतान्तर प्रचलित हैं और प्रत्येक धार्मिक संप्रदाय इस बात का दावा करता है कि मेरा धर्म सर्वश्रेष्ठ है। इसलिए वह अपने धर्म का मंडन और दूसरों का खंडन करने के लिये उद्यत रहता है, परन्तु ऐसे आदमी बहुत थोड़े हैं कि जो निष्पक्ष भाव से अपने और दूसरे के धार्मिक सिद्धान्तों की समालोचना करने पर तय्यार हों, जो आदमी अपने धर्म को दूसरे की अपेक्षा श्रेष्ठ साबित करना चाहे उसका कर्त्तव्य है कि विपक्षी के धर्म का अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करे और शास्त्रार्थ करने से पहले दोनों धर्मों के वास्तविक रूप को देखले, देखने में आता है कि जिस तरह बच्चा जन्म लेते ही माता पिता की भाषा बोलने लगता है इसी तरह वह उनका धर्म भी ग्रहण कर लेता है और इस बात के जानने की चेष्टा नहीं करता कि जिस मार्ग पर मैं चल रहा हूँ वह नियत स्थान को जाता है या नहीं।

आज से १३५० वर्ष पहले जितने धार्मिक सम्प्रदाय संसार में प्रचलित थे सब ने मनुष्यमात्र को धार्मिक विषय में स्वतन्त्रता दे रक्खी थी परन्तु यह हमारा दुर्भाग्य था कि संवत् ६१७ में अरब देश के बीच कुरैश जाति में अब्दुल्लाह की स्त्री आमिना के पेट से एक लड़का पैदा हुआ, जिसका नाम मोहम्मद रक्खा गया, उसने चालीस वर्ष की उमर में यह कहना आरम्भ किया कि मैं खुदा का रसूल (दूत) हूँ, उसने मुझ को आज्ञा दी है कि तलवार की धार पर अपने धर्म का प्रचार करूं और जो आदमी मेरी बात को न माने या उनमें किसी प्रकार का सन्देह करे उसका शिर काट लूं मोहम्मद ने अपने अनुयायिओं को छः बातों पर विश्वास रखने की आज्ञा दी—

(१) खुदा (ईश्वर) (२) मोहम्मद और कुरान
(३) मलाइका या फरिश्ते (देवता) (४) जिन्नात (भूत प्रेत)
(५) मुक़द्दर (प्रारब्ध) (६) क़यामत या इन्साफ़ (महाप्रलय)

मुक़द्दर और क़यामत की बात इतने खण्डन मण्डन से भरी हुई है कि उस

पर हंसी आये बिना नहीं रहती क्योंकि मुक़द्दर का यह अर्थ या अभिप्राय है कि खुदा ने सृष्टि की उत्पत्ति से पचास हज़ार वर्ष पहले प्रत्येक आदमी का कर्म लिख दिया था। आदमी जो अच्छा या बुरा कर्म करता है वह उसी लिखत के अनुसार करता है मतलब यह कि जीव कर्म करने में स्वतन्त्र नहीं है वह जो कुछ करता है खुदा के हुक्म या मरज़ी से करता है, काफ़िरों को खुदा ने ही बहका कर कुमार्ग पर डाल रक्खा है और उनकी आखों पर पट्टी बांध दी है और हृदय पर मोहर लगादी है जिससे न तो वे कुछ देख सकते हैं और न कुछ समझ सकते हैं। साथ ही खुदा मोहम्मदियों को आज्ञा देता है कि यदि काफ़िर कलमा न पढ़ें तो क़त्ल करदो इसके विरुद्ध क़यामत का यह अभिप्राय है कि महा-प्रलय के दिन खुदा जीवों का कर्मानुसार इन्साफ़ करेगा परन्तु मोहम्मद की खातिर मोहम्मदियों को जन्नत (स्वर्ग) में और काफ़िरों को दोज़ख (नरक) में भेज देगा।

यह बातें इतनी अनाप शनाप हैं कि साधारण आदमी भी उनको ग्रहण नहीं कर सकता, मैंने क़ुरान की इन अनाप शनाप बातों को अलग लिख दिया है, पाठक देखलें।

हिन्दुओं का मोहम्मदियों के शासनकाल में शंका करते ही शिर काट लिया जाता था परन्तु अब ईसाइयों के शान्तिमय राज्य में प्रत्येक आदमी को धर्म के विषय में पूरी स्वतन्त्रता है, हिन्दुओं को मोहम्मदी और ईसाइयों की धार्मिक बातों का इसलिये जानना ज़रूरी है कि अपने धर्म से उनका मुक़ाबला कर सकें, और समय पड़ने पर मौलवी और पादरियों को जवाब देकर पवित्र आर्य धर्म की रक्षा कर सकें, हिन्दी भाषा में आज तक कोई पुस्तक इस विषय की न थी इसलिये मैंने मौलवी अब्दुर्रहमान और स्वामी निर्मलदास के शास्त्रार्थ को जो धर्मनगरी में हुआ था, प्रश्नोत्तर के रूप में लिख दिया है। आशा है पाठकगण इससे लाभ उठायेंगे, यदि मेरा एक हिन्दू भाई इस पुस्तक को पढ़कर भ्रष्ट होने से बच गया या एक भी शुद्ध होकर सनातन धर्म में चला आया तो मैं अपना अहोभाग्य समझूंगा।

सरदारशहर, | **गणपतिराय,**
श्रावण कृष्णा ११ सं० १९८१ | अग्रवाल

इस्लाम-धर्म की समीक्षा

१. जिज्ञासु—इल्लत के बिना माल्लूल, अर्थात् कारण के बिना कार्य हो सकता है या नहीं ?

मौलवी—नहीं हो सकता।

२. जिज्ञासु—नेस्त से हस्त और हस्त से नेस्त, अर्थात् अभाव से भाव और भाव से अभाव हो सकता है या नहीं ?

मौलवी—नहीं हो सकता।

३. जिज्ञासु—एक चीज़ में दो मुतज़ाद वस्फ़, अर्थात् एक पदार्थ में दो विरुद्ध गुण होते हैं या नहीं ?

मौलवी—नहीं होते।

४. जिज्ञासु—मज़हब या धर्म शब्द का क्या अर्थ है ?

मौलवी—मज़हब शब्द का अर्थ अरबी भाषा में रास्ता या मार्ग होता है परन्तु व्यवहार में सृष्टि की उत्पत्ति, जीवात्मा के जन्म और मृत्यु के पश्चात् उसके भावाभाव और दुःख सुख के सम्बन्ध में जो विश्वास मनुष्य

हृदय में धारण करता है उसे मजहब या धर्म कहते हैं।

५. जि० दुनियां में कितने धर्म है ?

मौ०—यद्यपि दुनियां के धर्मों की संख्या नियत नहीं है तथापि उनकी विभक्ति चार भाग में हो सकती है।

(क) आत्मा को शरीर से पृथक् न मान कर मृत्यु पर उसका अभाव मानना, इस मत में मरने के पीछे नरक, स्वर्ग और दुःख, सुख कुछ नही है।

(ख) केवल एक खुदा या ब्रह्म का अनादि, अनन्त मानकर सारी सृष्टि और जीवात्मा का उसके द्वारा रचा जाना।

(ग) रूह और माद्दे अर्थात जीव और प्रकृति को स्वतंत्र रूप से न्यारा न्यारा मानकर उनके संयोग से उत्पत्ति और वियोग से नाश या प्रलय समझना।

(घ) जीव, प्रकृति और ईश्वर को अनादि अनन्त मानकर कर्म करने में जीव को स्वतंत्र और फल भोगने में ईश्वर के अधीन समझना।

६. जि०-आप कौन धर्म के अनुयायी है और ऊपर के चार सिद्धान्तों में किसको मानते हैं ?

मौ०—मैं इस्लाम धर्म का अनुयायी हूँ और ऊपर के सिद्धान्तों में नम्बर (२) को अच्छा समझता हूँ।

७. जि०—इस्लाम धर्म किसे कहते हैं और उसके क्या सिद्धान्त हैं ?

मौ०—इस्लाम धर्म का शब्दार्थ ईश्वर की मरज़ी पर चलना है, व्यवहार में इस्लाम धर्म उस धर्म को कहते हैं जिसे

अनुमान १३५० वर्ष पहले मोहम्मद साहब ने प्रचलित किया था, इस धर्म के सिद्धान्तों में दो भाग हैं एक दीन और दूसरे ईमान। दीन शब्द का अर्थ कर्त्तव्य कर्म और ईमान का विश्वास होता है। दीन में ५ कर्म कर्त्तव्य माने जाते हैं और ईमान में छः बातों पर विश्वास रखना होता है। दीन में पांच कर्त्तव्य कर्म (१) क़लमा (२) नमाज़, (३) रोज़ा, (४) हज और (५) ज़कात माने गये हैं और ईमान में (१) खुदा, (२) रसूल, (३) जन्नात, (४) मलाइका, (५) क़यामत, (६) मुक़द्दर पर विश्वास रक्खा जाता है।

जि०—दीन और ईमान अर्थात् कर्त्तव्य कर्म और विश्वास के सम्बन्ध में जो बातें आपने कही हैं कृपा करके उनको विस्तारपूर्वक समझा दीजिये।

मौ०—सुनिये दीन की बातें इस प्रकार हैं—

(क) "ला इलाह इल अल्लाह मोहम्मद उल रसूल अल्लाह" को क़लमा कहते हैं इसका अर्थ यह है कि खुदा के सिवाय दुनियां में और कुछ नहीं है अलबत्ता मोहम्मद साहब खुदा के रसूल या दूत हैं।

(ख) खुदा की हम्द या ईश्वर की स्तुति करने का नाम नमाज़ है, नमाज़ रात दिन में पाँच वार पढ़ी जाती है।

(ग) रोज़ा उपवास करने को कहते हैं, रमज़ान महीने में ३० दिन तक उपवास किया जाता है परन्तु रात्रि के समय जितनी वार इच्छा हो भोजन खाया जा सकता है।

(घ) अरब देश के मक्का नगर में काबा नामक जो खुदा का घर है उसकी यात्रा करने को हज कहते हैं।

(च) अपनी कमाई में से जो दान अनाथ और ग़रीब मुसलमानों को दिया जाता है ज़कात कहा जाता है।

ईमान के अन्तर्गत छः बातों पर विश्वास रखना होता है।

(क) खुदा अनादि, अनन्त, अजर, अमर, सर्वज्ञ और सर्वशक्तिमान् होता हुआ अपनी कुदरत या माया से सारे ब्रह्माण्ड का रचने वाला है।

(ख) खुदा समय समय पर धर्म प्रचारार्थ दुनियां में अपने रसूल या दूत भेजता रहता है, मोहम्मद साहिब से पहले भी बहुत से दूत खुदा ने धर्म-प्रचारार्थ दुनियां में भेजे थे परन्तु अन्त में मोह-म्मद साहब को भेज कर भविष्य के लिये खुदा ने रसूलों का भेजना बन्द कर दिया, साथ ही पिछले रसूलों की बातों को रद्द कर दिया, अब मोहम्मद को छोड़ कर किसी अन्य को खुदा का रसूल और कुरान को छोड़ कर अन्य धर्मपुस्तक को खुदा की किताब नहीं मानना चाहिये।

(ग) आदमियों के सिवाय खुदा ने एक सृष्टि और रच रक्खी है जहाँ के रहने वाले जिन्न कहलाते हैं परन्तु आदमियों को दिखाई नहीं देते, अलबत्ता आदमियों के लिये बुराई या भलाई कर सकते हैं।

(घ) खुदा ने जिन जीवों को अग्नि से पैदा किया, मला-इका या फ़रिश्ते कहलाते हैं जिनको आप देवता कह सकते हैं जिस तरह दुनियाँ के बादशाह राज्य

का काम कर्मचारियों से कराते हैं वैसे ही .खुदा ब्रह्माण्ड का काम फ़रिश्तों से कराता है।

(च) जिस दिन सारी सृष्टि का नाश होकर प्रलय होगी खुदा आदमियों का इन्साफ़ करेगा, परन्तु उस दिन मोहम्मद साहब .खुदा से मुसलमानों की सिफ़ारिश कराके अपराध क्षमा करा देंगे अर्थात् उस दिन मुसलमान जन्नत (स्वर्ग) में और अन्य धर्मावलम्बी दोज़ख़ (नरक) में भेजे जायेंगे, इस दिन का नाम क़यामत है।

(छ) जो कुछ अच्छे या बुरे कर्म आदमी करते हैं और जो कुछ दुःख सुख वे भोगते हैं, खुदा ने सृष्टि उत्पन्न करने से कई हज़ार वर्ष पहले आदमियों के भाग्य में लिख दिये थे, उसके विरुद्ध आदमी कुछ नहीं कर सकता, बस इसी का नाम मुकद्दर है, जिसको आप प्रारब्ध कह सकते हैं।

९. जि०—खुदा भौतिक है या अभौतिक, सर्वदेशी है या एकदेशी, न्यायकारी है या पक्षपाती, सारी सृष्टि का कर्त्ता है या किसी एक सम्प्रदाय का ?

मौ०—.खुदा अभौतिक है, सर्वदेशी है, न्यायकारी है और सारी सृष्टि का कर्त्ता है।

१०. जि०—इस्लाम धर्म में सृष्टि और जीवात्मा की उत्पत्ति कैसे मानी गई है ?

मौ०—इस्लाम कहता है कि जब खुदा ने आदमी को पैदा करना चाहा तो उसने फ़रिश्तों से गारा या मिट्टी मँगाई, जब वह आगई तो खुदा ने उसको मथकर पुतला बनाया,

जब पुतला तय्यार हो गया तो खुदा ने उसमें रूह या आत्मा फूंक दी, इसके कारण पुतला जड़ से चेतन हो गया और बोलने लगा. इस पुतले का नाम खुदा ने आदम रक्खा। फिर एक दिन खुदा ने आदम के शरीर में से एक पसली निकाली और अपनी माया या कुदरत से उस पसली को स्त्री बना दिया इस स्त्री का नाम खुदा ने हव्वा रक्खा, इसके पीछे आदम और हव्वा से जो संतान पैदा हुई परस्पर विवाह सम्बन्ध करती रही, होते होते आदम और हव्वा की औलाद सारी दुनियाँ में फैल गई।

११. जि०—आप कहते हैं कि आदम के पुतले के वास्ते खुदा ने फ़रिश्तों से गारा या मिट्टी मंगाई थी तो क्या आदम की उत्पत्ति से पहिले मिट्टी मौजूद थी ?

मौ०—हाँ मौजूद थी क्योंकि खुदा अरबाय अनासिर (पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु) और फ़रिश्तों को आदम से पहले पैदा कर चुका था। यह याद रखना चाहिये कि फ़रिश्ते आग से पैदा किये गये थे और आदम मिट्टी से।

१२. जि०—आप कहते हैं कि आदम से पहले जब खुदा ने फ़रिश्तों को पैदा किया तो उस समय पृथ्वी, जल, अग्नि और वायु मौजूद थे। अब मेरा पूछना यह है कि उपरोक्त चीजें कहाँ से आई ? क्या अभाव से भाव हो गया।

मौ०—खुदा ने अपनी कुदरत या माया से इन चीजों को पैदा कर दिया।

१३. जि०—खुदा को तो आप अभौतिक मान चुके हैं फिर उसने यह भौतिक पदार्थ कहाँ से पैदा कर दिये ?

मौ०—खुदा सर्वशक्तिमान है, जो चाहे सो कर सकता है।

१४. जि०—तो इस अवस्था में अभाव से भाव और कारण के बिना कार्य हो गये इन बातों को आप असम्भव मान चुके हैं।

मौ०—संभवासंभव की तर्क आदमी के काम में हो सकती है खुदा के काम में नहीं हो सकती।

१५. जि०—खुदा ने आदम के पुतले का गारा कैसे मथा क्योंकि खुदा शरीरधारी नहीं है।

मौ०—बिना शरीर के भी खुदा सब काम कर सकता है।

१६. जि०—कैसे ?

मौ०—मैं इसका कुछ उत्तर नहीं दे सकता।

१७. जि०—देखना, सुनना इत्यादि बिना हवास खमसा या ज्ञान-इन्द्रियों के हो सकता है या नहीं ?

मौ०—नहीं हो सकता।

१८. जि०—आप कहते हैं कि खुदा ने आदम के पुतले में रूह (आत्मा) फूँक दी जिसके कारण पुतला जड़ से चेतन हो गया। अब मैं यह पूछना चाहता हूँ कि रूह खुदा के शरीर में पहले से थी या खुदा की फूंक से ही बन गई ?

मौ०—रूह खुदा के शरीर में पहले से नहीं थी वह खुदा की फूँक के साथ हो गई।

१९. जि०—फूँक बिना मुँह के दी जा सकती है या नहीं ?

मौ०—नहीं दी जा सकती।

२०. जि०—क्या खुदा मुँहवाला है और फूँक मार सकता है ?

मौ०—खुदा सब कुछ कर सकता है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है।

२१. जि०—आप कह चुके हैं कि कारण के बिना कार्य नहीं हो सकता फिर मुँह के बिना फूँक कैसे दी गई?

मौ०—मैंने जो कुछ कारण और कार्य के विषय में कहा था वह आदमियों के सम्बन्ध में कहा था, खुदा के सम्बन्ध में नहीं कहा था।

२२. जि०—जब खुदा सर्वशक्तिमान् है और सम्भवासम्भव प्रत्येक काम कर सकता है तो क्या अवतार भी धारण कर सकता है?

मौ०—नहीं धारण कर सकता।

२३. जि०—क्यों?

मौ०—मैं इसका कुछ उत्तर नहीं दे सकता।

मेराज

२४. जि०—आप मेराज को मानते हैं या नहीं और उसका क्या मतलब है?

मौ०—हाँ मैं मेराज को मानता हूँ और उसका यह मतलब है कि हमारे नबी मोहम्मद साहब बुराक़ नामक जानवर पर चढ़कर खुदा से मिलने के लिये सातवें आसमान पर गये थे।

२५. जि०—आसमान क्या चीज़ है? क्या उस पर सीढ़ी लगाई जा सकती है और क्या उस पर कोई जानवर चढ़ सकता है, यह भी बताने की कृपा कीजिये कि हवा कितनी ऊंचाई तक है और आदमी कितनी ऊंचाई तक जीवित रह सकता है?

मौ० यद्यपि साइंस या विज्ञान ने आकाश को शून्य वस्तु माना है तथापि इस्लाम धर्म में उसके सात परत माने गये हैं। जब आकाश के परत हैं तो उन पर सीढ़ी क्यों नहीं लगाई जा सकती और जानवर क्यों नहीं चढ़ सकता। विज्ञान शास्त्र ने पृथ्वी से अनुमान पाँच मील की ऊंचाई तक हवा मानी है और यह भी कहा है कि इससे अधिक ऊंचाई पर आदमी जीवित नहीं रह सकता। परन्तु हम धर्म के सामने विज्ञान को नहीं मानते। इसीलिये मौलवियों ने विज्ञान का पढ़ना पढ़ाना मना किया है, क्योंकि उससे इस्लाम धर्म पर श्रद्धा नहीं रहती, जैसा कि किसी ने कहा है—

फ़लसफ़ी रा चश्म नाबीना बुअद।

गरचे बेकन बाशदो या बूअली सेना बुअद।

अर्थ—दर्शनशास्त्र के जानने वाले अन्धे होते हैं चाहे बेकन हों और चाहे बूअली सेना हो।

२६. जि०—क्या विज्ञानशास्त्र (साइंस) झूठा है ?

मौ०—चाहे झूठा हो चाहे सच्चा परन्तु मौलवी उसकी निन्दा करते हैं।

२७. जि० —मौलवी साइन्स की क्यों निन्दा करते हैं ?

मौ०—क्योंकि साइन्स पढ़ने से इस्लाम धर्म पर श्रद्धा नहीं रहती।

२८. जि०—तो क्या इस्लाम धर्म साइन्स के विरुद्ध है ?

मौ०—मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

२९. जि०—क्यों ?

मौ०—मेरी इच्छा।

३०. जि०—खुदा एकदेशी है या सब जगह हाज़िर नाज़िर है।

मौ०—खुदा सब जगह हाज़िर नाज़िर है।

३१. जि०—जब खुदा हर जगह हाज़िर नाज़िर है तो फिर मोहम्मद साहब उससे मिलने के लिये सातवें आसमान पर क्यों गये ?

मौ०—खुदा ने जबरईल फ़रिश्ते की मारफ़त हमारे नबी मोहम्मद साहब को मिलने के वास्ते बुलवाया था।

३२. जि०—कहां से बुलाया था ?

मौ०—मक्का शरीफ़ से।

३३. जि०—तो क्या उस समय खुदा मक्का शरीफ में नहीं था और क्या वह किसी ख़ास जगह बैठा हुआ था ?

मौ०—मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

३४. जि०—मेराज के सम्बन्ध में लिखा है कि परदे के भीतर से कई बार आवाज़ आई कि "ऐ मोहम्मद पास आ पास आ" क्या यह बात सच है ?

मौ० हाँ सच है।

३५. जि०—यह आवाज़ किसकी मानी जाती है ?

मौ०—खुदा की।

३६. जि०—क्या खुदा आवाज़ दे सकता है क्योंकि आवाज़ बिना जबान के नहीं दी जा सकती।

मौ०—खुदा सब कुछ कर सकता है क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है उसके कामों में संभवासंभव की शंका नहीं हो सकती।

३७. जि०— आप मोहम्मद साहब को "हबीबे खुदा" मानते हैं या नहीं और उसका क्या मतलब है ?

मौ०—हाँ, हम हज़रत मोहम्मद साहब को "हबीबे खुदा" मानते हैं, इन शब्दों का अर्थ होता है "खुदा का प्यारा"

३८. जि०—क्या खुदा में शत्रुता, मित्रता का होना आप मानते हैं ?

मौ०—हाँ मानते हैं क्योंकि वह क़ाफ़िरों का शत्रु है और मुसलिमों का मित्र।

३९. जि०—खुदा मोहम्मद साहब को प्यारा क्यों मानता है ?

मौ०—अव्वल तो यह कि खुदा ने सबसे पहले मोहम्मदी नूर को पैदा किया था दूसरे यह कि ताऊस (मोर) की शकल में जन्नत के वृक्ष पर बैठ कर मोहम्मद साहब ने चालीस हज़ार वर्ष तक खुदा की स्तुति की थी।

४०. जि०—क्या मोहम्मद साहब के नूर को खुदा ने आदम से पहले पैदा किया था ?

मौ० हाँ।

४१ जि०—क्या फ़रिश्तों से भी पहले किया था ?

मौ०—हाँ।

४२. जि०— क्या पृथ्वी और आकाश से भी पहले पैदा किया था ?

मौ० मैं ठीक नहीं कह सकता।

४३. जि०—कुरान की इस आयत का क्या मतलब है "ए मोहम्मद मैं पैदा न करता ज़मीन और आसमान को यदि मैं पैदा न करता तुमको" क्या इससे यह सिद्ध नहीं होता कि मोहम्मद साहब ज़मीन और आसमान की उत्पत्ति से पहले ही पैदा कर दिये गये थे ?

मौ०—हाँ इससे तो यही पाया जाता है।

४४. जि०—आप पुनर्जन्म या तनासुख को मानते हैं या नहीं ?

मौ०—इस्लाम धर्म पुनर्जन्म को नहीं मानता।

४५. जि०—आप पहले कह चुके हैं कि जन्नत के वृक्ष पर बैठकर मोहम्मद साहब मोर की शकल में ४०,००० वर्ष तक खुदा की हम्द (स्तुति) करते रहे, मैं पूंछना चाहता हूं कि क्या उस समय मोर पैदा हो चुका था ?

मौ०—होचुका होगा, जभी तो मोर का नाम आया है।

४६. जि०—पृथ्वी पर जानवर और वृक्ष आदम से पहले पैदा हो चुके थे वा पीछे किये गये ?

मौ०—जहां तक मेरा विचार है आदम से पीछे किये गये थे।

४७. जि०—जब आप मोहम्मद साहब की उत्पत्ति आदम से पहले और जानवरों की पैदाइश आदम से पीछे मानते हैं तो मोहम्मदी नूर मोर की शकल में खुदा की माला कैसे फेर सकता है क्योंकि मोर तो उस समय पैदा ही नहीं हुआ था।

मौ०—मैंने पृथ्वी की बात कही है न कि आसमान की, सम्भव है कि बहिश्त में मोर पहले पैदा हो चुका हो।

४८. जि०—मोहम्मदी नूर में नूर शब्द से आप क्या मतलब लेते हैं, वह जड़ था या चेतन ?

मौ०—जहाँ तक मेरा विचार है नूर का मतलब रूह से है, नूर का शब्दार्थ प्रकाश वा ज्योति का ही होता है।

४९. जि०—नूर सिफ़्त है या मौसूफ़ अर्थात् गुण है या गुणी ?

मौ०—जहाँ नूर का अर्थ प्रकाश का या ज्योति का लिया जाय वहाँ वह सिफ़्त अर्थात् गुण समझा जायगा परंतु जहां

नूर शब्द का अर्थ रूह या आत्मा किया जाय वहाँ वह मौसूफ़ या गुणी हो जायगा।

५०. जि०—प्रत्येक गुणी में कुछ गुण होता है या नहीं ?

मौ०—हाँ होता है।

५१. जि०—अच्छा रूह या आत्मा का क्या गुण है, विस्तार पूर्वक वर्णन कीजिये।

मौ०—रूह या आत्मा का मैं कुछ गुण नहीं बता सकता क्योंकि उसको हम केवल खुदा का हुक्म या आज्ञा मानते हैं।

५२. जि—अच्छा आप इस्लाम की निम्नलिखित कथा को मानते हैं या नहीं जो मोहम्मद साहब की कही हुई है "क़यामत के दिन आत्मा और शरीर में झगड़ा होगा और प्रत्येक अपना दोष दूसरे पर रक्खेगा, आत्मा कहेगी कि—"या खुदा तूने मुझको बिना शरीर के पैदा किया था न मेरे हाथ थे जिससे मैं काम करता, न चलने को पाँव थे, न देखने को आँख थी, न समझने को बुद्धि थी, जब मेरा संयोग शरीर से हुआ तब मैंने सारे पाप किये इसलिये शरीर को दण्ड मिलना चाहिये"। इसके विरुद्ध शरीर यह कहेगा "या मेरे मालिक मैं तो पत्थर के समान निर्जीव था और काम करने की मुझ में कुछ शक्ति न थी; जब आत्मा ने मुझ में प्रवेश किया मैं काम करने लग गया इसलिये जो कुछ किया है आत्मा ने किया है फल भी इसी को मिलना चाहिये"। इन दोनों की बात सुन कर खुदा कहेगा कि जिस तरह अंधे और लंगड़े ने मिल कर बाग़ के फल खाये थे और मालिक ने उन दोनों को दण्ड दिया था इसी तरह तुम

दोनों दण्ड के योग्य हो क्योंकि तुम दोनों ने मिल कर पाप किये हैं ?

मौ०—हाँ मैं इस कथा को मानता हूँ।

५३. जि०—इस कथा के मानने से आत्मा और देह न्यारी २ वस्तु सिद्ध होती है या नहीं ?

मौ०—हाँ होती है।

५४. जि०—तो फिर आप कैसे कहते हैं कि आत्मा खुदा की फूंक या आज्ञा है ?

मौ०—मैं आत्मा के विषय में इससे अधिक और कुछ नहीं कह सकता।

मूर्त्तिपूजा

५५. जि०—आप कह सकते हैं कि मूर्ति या तसवीर का क्या अर्थ है ?

मौ०—किसी आदमी या चीज़ की शकल पत्थर या मिट्टी की बनाई जाती है उसको मूर्त्ति और जो काग़ज़ या दीवार पर बनाई जाती है उसको तसवीर कहते हैं।

५६. जि०—किसी आदमी की मूर्त्ति या तसवीर देखकर यह बोध होता है या नहीं कि यह अमुक आदमी की है ?

मौ०—हाँ होता है।

५७. जि०—आदमी का बोध होने पर उसके कर्मों की तरफ भी ध्यान जाता है या नहीं ?

मौ०—हाँ जाता है।

५८. जि०—साधु महात्मा की तसवीर देखकर ईश्वर की भक्ति और

वेश्या की तसवीर देखकर काम भोग की तरफ़ मन जाता है या नहीं ?

मौ०—कभी कभी चला जाता है।

५९. जि०—आप कह सकते हैं कि सरकार ने स्त्रियों की नङ्गी तसवीरों का बेचा जाना और दिखाया जाना क्यों दण्डनीय माना है ?

मौ०—इसलिये कि इन गंदी तसवीरों को देखकर आदमी का मन ज़िना की तरफ़ जाता है और उससे व्यभिचार के बढ़ने का भय है।

६०. जि०—काबा क्या वस्तु है जिसका हज करने के लिये मुसलमान मक्का को जाते हैं ?

मौ०—मक्का शरीफ़ में हज़रत इस्माईल ने एक मन्दिर बनवाया था जिसमें ३६० मूर्त्तियों की पूजा होती थी परन्तु मोहम्मद साहब ने मूर्त्तियोंको तोड़ फोड़ कर फेंक दिया। अलबत्ता मन्दिर की परिक्रमा जारी रक्खी, उसी का नाम हज है।

६१. जि०—क्या आप काबे को "वैत उल अल्लाह" भी कहते हैं और इसका क्या अर्थ है ?

मौ०—निःसंदेह मुसलमान काबे शरीफ़ को 'वैत उल अल्ला' कहते हैं जिसका अर्थ है खुदा का घर।

६२. जि०—क्या खुदा एकदेशी है जो एक घर में वैठा हुआ है ?

मौ०—खुदा एकदेशी तो नहीं है परन्तु इबादत के कारण काबे को खुदा का घर कहा जाता है।

६३. जि०—प्रत्येक जगह को, जहां खुदा की इबादत होती हो, खुदा

का घर क्यों नहीं कहा जाता और यदि कहा जाये तो क्या हरज है ?

मौ०—इबादत की प्रत्येक जगह को यदि खुदा का घर कह दिया जाय तो कुछ हरज नहीं, जैसे कि प्रत्येक मसजिद को कहा जाता है।

६४. जि०—क्या ईसाई गिरजों में और हिन्दू मन्दिरों में खुदा की इबादत नहीं करते, यदि करते हैं तो गिरजों और मन्दिरों को खुदा का घर मानने में क्या हानि है ?

मौ०—हानि तो कुछ नहीं है परन्तु उनमें मूर्त्ति और तसवीर होती है जिनकी इस्लाम आज्ञा नहीं देता।

६५. जि०— जिन गिरजों और मन्दिरों में मूर्त्ति या तसवीर नहीं हैं और जिनमें खुदा की इबादत होती है उनको खुदा का घर मानने में क्या हरज है ?

मौ०—मैं कुछ नहीं कह सकता।

६६. जि०—आप कह चुके हैं कि साधु महात्माओं की तसवीर देखने से मन भलाई की तरफ और वैश्याओं की देखने से बुराई की तरफ़ जाता है। अब यह बताइये कि यदि इबादत और भक्ति की जगह साधु महात्मा और भक्तों की तसवीर या मूर्त्ति हों तो लाभ है या हानि ?

मौ०—मूर्त्तियों को खुदा मानकर पूजा की जाती है इसलिये हानि है।

६७. जि०—मैं यह पूछता हूँ कि केवल महात्माओं की मूर्ति रखने से क्या हानि है ?

मौ०—मैं कुछ नहीं कह सकता।

६८. जि०—क्यों ?

मौ०—मेरी इच्छा ।

६९. जि०—कुरान की इस आयत का क्या मतलब है "लात और उज्ञा नामक देवताओं की पूजा से उद्धार की आशा रखनी चाहिये" ।

मौ०—यह वचन हज़रत का नहीं है बल्कि शैतान ने अपनी तरफ़ से मिला दिया था ।

७०. जि०—क्या नबी और रसूलों को भी शैतान बहका सकते हैं ?

मौ० मैं ठीक २ नहीं कह सकता ।

७१. जि०—देखिये अरब की तवारीख़ आपके सामने रक्खी जाती है इसको पढ़कर बताइये कि क्या मतलब है "खलीद इब्नेवलीद ने हज़रत (मोहम्मद) से कहा कि जब मैंने उज्ञा नामक देवी की मूर्ति को तोड़ा तो उसके पास से एक स्त्री रोती पीटती बाल बखेरे हुई निकली, मैंने तत्काल तलवार से उसके दो टुकड़े कर दिये, अब यह बताइये कि वह स्त्री कौन थी" हज़रत ने फरमाया कि "निःसंदेह वह स्त्री साक्षात् उज्ञा देवी थी ।"

मौ०—मैं नहीं कह सकता कि यह क्या बात है मैंने इस तवारीख़ को पहले कभी नहीं देखा ।

७२. जि०—क्या क़ाबे के मन्दिर में कोई काला पत्थर रक्खा हुआ है और क्या हज्ज करते समय मुसलमान उसको चूमते हैं ?

मौ०—हाँ रक्खा हुआ है और मुसलमान उसको चूमते हैं ।

७३. जि०—क्यों ?

मौ०—कहा जाता है कि उस पत्थर में पाप दूर करने की शक्ति है । पहले वह सफेद था लोगों का पाप चूमते २ काला

हो गया, इसके अतिरिक्त वह पत्थर क़यामत के दिन खुदा के सामने गवाही देगा कि अमुक आदमी तो अच्छा है और अमुक बुरा अर्थात् अमुक निर्दोषी है और अमुक दोषी।

७४. जि०—जब खुदा सर्वज्ञ और अन्तर्यामी है तो पत्थरों की गवाही क्यों लेता है ?

मौ०—उसकी इच्छा, मैं कुछ नहीं कह सकता।

७५. जि०—क्या कंकर, पत्थर और दरख़्तों ने मोहम्मद साहब का क़लमा पढ़ा था ?

मौ०—हाँ पढ़ा था।

७६. जि०—फिर आप यह क्यों कहते हैं कि पत्थर कुछ नहीं कर सकते ?

मौ०—पत्थर जो कुछ करते हैं खुदा के हुक्म से करते हैं परन्तु वे स्वयं खुदा नहीं बन सकते।

शिफ़ाअत

७७. जि०—यदि आपका कोई मुक़दमा अदालत मुन्सफ़ी में हो और मुन्सिफ़ साहब प्रमाण के विरुद्ध किसी बड़े आदमी की सिफ़ारिश मानकर आपका मुक़द्दमा ख़राब करदें तो आप मुन्सिफ़ साहब को क्या कहेंगे ?

मौ० -महापापी और अन्यायी।

७८. जि०—फिर इसी तरह हाईकोर्ट (High Court) और प्रीवी-कौंसिल (Privy Council) के जज भी सिफ़ारिश मानकर आपकी अपील ख़ारिज करदें तो आप उनको कैसा समझेंगे ?

मौ०—वे भी पापी और अन्यायी समझे जायेंगे।

७९. जि०—ख़ुदा न्यायकारी है या सिफ़ारिश मानने वाला?

मौ०—ख़ुदा न्यायकारी और सत्य का प्रेमी है।

८०. जि०—जो धर्म ख़ुदा को सिफ़ारिश मानने वाला बताये उसे आप कैसा समझते हैं?

मौ०—जो धर्म ख़ुदा को सिफ़ारिश मानने वाला साबित करे कभी ग्रहण करने योग्य नहीं हो सकता।

८१. जि०—आप शिफ़ाअत को मान कर मोहम्मद साहब को 'शफ़ी उल अमम' कहते हैं या नहीं?

मौ०—हाँ मैं शिफ़ाअत को मानता हूँ और हज़रत को शफ़ी उल अमम' समझता हूँ।

८२. जि०—'शिफ़ाअत' और 'शफ़ी उल अमम' शब्द का क्या अर्थ है?

मौ०—शिफ़ाअत शब्द का अर्थ सिफ़ारिश और शफ़ी उल अमम शब्द का अर्थ उम्मत की सिफ़ारिश करने वाला होता है।

८३. जि०—इन दोनों शब्दों का क्या मतलब है?

मौ०—मुसलमानों का विश्वास है कि जब क़यामत के दिन ख़ुदा आदमियों का इन्साफ़ करेगा तो मोहम्मद साहब ख़ुदा से सिफ़ारिश करके मुसलमानों के पाप क्षमा कराकर जन्नत में भिजवादेंगे।

८४. जि०—क्या ख़ुदा मुसलमानों के अच्छे बुरे कर्मों की तरफ़ कुछ ध्यान न देगा?

मौ०—नहीं, मोहम्मद साहब की ख़ातिर मुसलमानों के सारे अपराध क्षमा कर देगा।

८५. जि०—अन्य धर्मावलम्बियों के यदि अच्छे कर्म हुए तो उनके साथ क्या सलूक होगा ?

मौ०—वे सब दोज़ख़ (नरक) में भेजे जायेंगे क्योंकि वे काफ़िर रहे और उन्होंने इस्लाम को क़बूल नहीं किया।

८६. जि०—पुण्य किसे कहते हैं और पाप किसे ? खुदा पुण्य करनेवाले को अच्छा समझता है या पाप करने-वालों को ?

मौ०—खुदा पुण्य करनेवालों को अच्छा समझता है।

८७. जि०—आप कहते हैं कि खुदा पुण्यकर्मों को अच्छा समझता है और पाप को बुरा तो अब आप यह बताइये कि पुण्यकर्म किसे कहते हैं और पाप किसे ?

मौ०— साधारण रीति पर खुदा की इबादत (ईश्वरभक्ति) और ज़कात (दान) को सब धर्मों में अच्छा और चोरी जारी को बुरा माना गया है।

८८. जि०—निर्दोष आदमियों और व्यापारियों को लूटना आप कैसा समझते हैं, वह खुदा को प्रिय है या अप्रिय ?

मौ०—लूट मार और रक्तपात से खुदा राज़ी नहीं होता।

८९. जि०—निम्नलिखित सिद्धान्तों तथा कुरान की आज्ञाओं को पढ़कर बताइये कि यह सच्चे हैं या झूठे ?

इस्लाम धर्म के सिद्धान्त

१ ईश्वर का कोई सहायक नहीं है, अलबत्ता मोहम्मद साहब उसके दूत हैं।

२ मोहम्मद साहब ईश्वर के अन्तिम दूत हैं अब भविष्य में कोई दूसरा दूत ईश्वर की तरफ से धर्म प्रचारार्थ इस दुनियाँ में नहीं आयेगा।

३ कुरान ईश्वर की सच्ची और अन्तिम धर्म-पुस्तक है। अब भविष्य में दूसरी कोई धर्म-पुस्तक ईश्वर की तरफ से इस दुनियां में नहीं भेजी जायगी।

४ मोहम्मद साहब से पहले जितने धर्म आचार्य और कुरान से पहले जितनी धर्मपुस्तकें ईश्वर की तरफ से इस दुनियां में भेजी गई थीं उन सबको ईश्वर ने रद्द कर दिया है।

५ जो आदमी मोहम्मद साहब के अतिरिक्त किसी अन्य आचार्य को धर्म-गुरु और कुरान के अतिरिक्त अन्य पुस्तक को धर्म-पुस्तक माने या मोहम्मद साहब और कुरान बातों पर किसी प्रकार का संदेह या तर्क करे तो वह काफिर है। काफिर को मार डालना प्रत्येक मुसलमान का धार्मिक कर्त्तव्य है।

६ उपदेश द्वारा या तलवार की धार पर काफिरों को मुसलमान बनाना और न बनने पर उनको यमपुर भेजना मुसलमानों का धार्मिक कर्त्तव्य है।

७ जो आदमी ऊपर से इस्लाम धर्म का मानने वाला और भीतर से न माननेवाला हो उसको मुनाफिक कहते हैं, जो आदमी मुसलमान बन कर उसके सिद्धान्तों से फिर जाय उसको मुरतिद कहते हैं। मुसलमानों को चाहिये कि मुनाफ़िक़ और मुरतिद का सिर काट लें।

८ इस्लाम धर्म के फैसाने में जो मुसलमान काफिर को मारता है वह ग़ाज़ी कहा जाता है और जो काफ़िर के हाथ से मारा जाता

वह शहीद कहलाता है। दोनों अवस्था में, ग़ाज़ी हो या शहीद, मुसलमान बहिश्त (स्वर्ग) में भेजा जाता है।

९ काफ़िरों को मारना, उनके मन्दिर और धर्म-स्थानों को ढाना, मूर्तियों को तोड़ना, पुस्तकों को जलाना, काफिरों की स्त्री और बच्चों को दास दासी बना कर भोग में लाना और उनके धन दौलत को लूटना—मुसलमानों के लिये जिहाद कहा जाता है। जिहाद का करना प्रत्येक मुसलमान का सब से बड़ा धार्मिक कर्त्तव्य है।

१० जिहाद में काफ़िरों का जो माल या स्त्री बच्चे मुसलमानों के हाथ लगें उनमें पांचवां भाग मोहम्मद साहब या ख़लीफ़ा का और बाक़ी लूटने वाले मुसलमानों का होता है।

११ महाप्रलय के दिन जब ईश्वर आदमियों का इन्साफ़ करेगा तो मोहम्मद साहब ईश्वर से मुसलमानों की सिफ़ारिश करेंगे यह कह कर कि मेरे अनुयायी हैं, ईश्वर मोहम्मद साहब की ख़ातिर सब मुसलमानों को स्वर्ग में और अन्य धर्म अनुयायिओं को नरक में भेज देगा।

मुसलमानों के लिए क़ुरान की आज्ञा

(१) जो मुसलमान काफ़िरों को मित्र बनाते हैं उनको कुछ लाभ नहीं होगा।

(२) ऐ मुसलमानो ! काफ़िरों को मित्र मत बनाओ क्योंकि ऐसा करने से खुदा नाराज़ होता है।

(३) खुदा जिहाद करनेवालों को नहीं करनेवालों से उत्तम समझता है क्योंकि जो मुसलमान जिहाद को छोड़ देता है खुदा के यहाँ अच्छा नहीं समझा जाता।

(४) मुसलमानों को चाहिये कि मुरतिद को क़त्ल कर डाले।

(५) ऐ पैग़म्बर मुसलमानों को काफ़िरों के मारने के लिये शौक़ दिला।

(६) ऐ मुसलमानो ! जिहाद करके काफ़िरों को यहां तक मारो कि उनका नामो निशान दुनियां में बाक़ी न रहे और सारी पृथ्वी पर मुसलमानी धर्म हो जाय।

(७) ऐ मुसलमानो ! यदि काफ़िरों से मिलो तो निःसंदेह उनका सिर काट लो यहांतक कि या तो काफ़िर मुसलमान बन जायें या जज़िया दें।

(८) ऐ खुदा ! हमको उन लोगों का सीधा मार्ग दिखा जिन पर तूने कृपा की और उन लोगों का रास्ता मत दिखा जिन पर तूने क्रोध किया। अध्याय १ ॥

(९) ऐ मोहम्मद ! जो लोग नास्तिक हुए उनको डराना और न डराना बराबर है वह तेरी बात नहीं मानेंगे क्योंकि हमने उनके दिलों पर मोहर करदी है और उनकी आंखों पर परदा डाल दिया है उनको बुरी मार पड़ेगी। अ० २ ॥

(१०) जो कुछ पृथ्वी और आकाश में है सब खुदा का है, चाहे तुम अपने जी की बात खोलो, चाहे छिपाओ, खुदा तुमसे हिसाब लेगा परन्तु जिसको चाहे छोड़ देगा और जिसको चाहे सज़ा देगा क्योंकि खुदा का सब पर अधिकार है। अध्याय ३ ॥

(११) खुदा जिसको चाहे राज्य देता है और जिसका राज्य छीनना चाहे छीन लेता है जिसको चाहे मान्य देता है और जिसको चाहे अपमान देता है सारी बातें उसके हाथ में हैं क्योंकि वह सर्वशक्तिमान् है। अ० ३ ॥

(१२) मुसलमानों को चाहिये कि काफ़िरों को मित्र न बनायें जो

मुसलमान काफ़िरों को मित्र बनाता है वह खुदा का नहीं है। अ० ३ ॥

(१३) जो आदमी खुदा पर विश्वास करते हैं और शुभ कर्म करते हैं उनको खुदा पूरा फल देता है क्योंकि उसको अन्याय पसन्द नहीं है। अ० ३ ॥

(१४) जो आदमी इस दुनियां के जीवन को परलोक के लिये बेचता है और जो खुदा की राह में काफिरों से जिहाद करके लड़ता है चाहे मरे, चाहे मारे उसको खुदा की तरफ़ से बहुत अच्छा फल मिलता है। अ० ४ ॥

(१५) जिन स्त्रियों के साथ तुम्हारे पिता का विवाह हो चुका उनको अपने भोग में मत लाओ जो कुछ पहले हो चुका सो हो चुका। अ० ४ ॥

(१६) जब लोगों से भलाई होती है तो कहते हैं कि खुदा की तरफ़ से है और जब बुराई होती है तो कहते हैं कि आदमी की तरफ़ से है यह बात ठीक नहीं है बुराई या भलाई दोनों खुदा की तरफ़ से मिलती हैं। अ० ४ ॥

(१७) यदि काफ़िर मुसलमान न बनें तो जहां देखो पकड़ो और मारो। मुसलमानों को चाहिये कि काफ़िरों को अपना मित्र और सहायक न बनावें। अ० ४ ॥

(१८) जिसको खुदा बहकाता है उसको कोई सत्य मार्ग पर नहीं ला सकता। अ० ४ ॥

(१९) जो आदमी बुरा करेगा सज़ा पायगा और जो भला करेगा मर्द हो वा स्त्री यदि ईमान रखता होगा तो जन्नत (स्वर्ग) में जायगा। अ० ४ ॥

(२०) खुदा ने काफिरों के दिलों में महाप्रलय तक शत्रुता और द्रोह भर दिया है । अ० ५ ॥

(२१) जो आदमी इसलाम पर ठट्ठा उड़ाते हैं उनसे मित्रता मत करो । अ० ५ ॥

(२२) जिस आदमी को खुदा सत्य मार्ग दिखाता है उसका हृदय खोल देता है और जिसको बहकाता है उसका हृदय सङ्कुचित कर देता है । अ० ६ ॥

(२३) खुदा ने शैतान को आज्ञा देदी है कि महाप्रलय तक आदमियों को बहकाता फिरे । अ० ७ ॥

(२४) जिसको खुदा बहकाता है उसका कोई सहायक नहीं हो सकता । अ० १७ ॥

(२५) खुदा ने काफिरों को उछालने और उभारने के लिये शैतान (राक्षस) छोड़ रक्खे हैं । अ० १९ ॥

(२६) मोहम्मद और उनके मित्रों का स्वभाव है कि परस्पर शीतल हैं और काफिरों पर कठोर । ४८ ॥

(२७) खुदा ने पृथ्वी, आकाश और सब वस्तु ६ दिन के भीतर बनाई । अ० ५१ ॥

(२८) मेराज में (मुलाकात के समय) खुदा और मोहम्मद के बीच दो धनुष का अन्तर रहा । अ० ५३ ॥

(२९) जन्नत में नाना प्रकार का मांस खाने को, स्वादिष्ट मदिरा पीने को और खूबसूरत स्त्री लौंडे मजा करने को मिलेंगे । अ० ५६ ॥

(३०) जो आदमी खुदा के लिये जिहाद करके काफिरों से लड़ते हैं खुदा उसको बहुत चाहता है । अ० ६१ ॥

(३१) खुदा के सिंहासन को फ़रिश्ते (देवता) उठाये हुए हैं। अ० ६९ ॥

(३२) खुदा के हुक्म के बिना पत्ता भी नहीं हिल सकता। अ० ॥

(३३) यदि खुदा चाहे तो आदमी बुरे कर्म्म कभी न करे और सब आदमी सच्चे धर्म को स्वीकार करलें।

(३४) जिन काफ़िर स्त्रियों के पति जिहाद में मुसलमानों के हाथ से मारे जायें वे मुसलमानों के लिये भोगने योग्य हैं। मुसलमान उन स्त्रियों में से १, २, ३ और ४ तक के साथ विवाह कर सकते हैं या युद्ध में पकड़ी हुई स्त्रियों को दासी बनाकर अपने भोगने में ला सकते हैं।

मौ०—हां मैं इन सिद्धान्तों तथा कुरान की आज्ञाओं को मानता हूं, यह सब सच्चे हैं।

९०. जि०—इन सिद्धान्तों में मुसलमानों के लिये काफ़िरों को लूटने और मारने की आज्ञा दी गई है या नहीं ?

मौ०—हां, दी गई है परन्तु यह आज्ञा खुदा की तरफ़ से दी गई है इसलिये मुसलमान पाप के भागी नहीं होते।

९१. जि०—क्या काफ़िरों को लूटे जाने और मारे जाने में दुःख नहीं होता ?

मौ०—होता होगा, हमको कुछ परवाह नहीं, हम तो जो कुछ मोहम्मद साहब ने फरमाया है उसका बजा लाना अपना फ़र्ज़मनसबी (कर्त्तव्य) समझते हैं।

९२. जि०—जो आदमी अपने साथ भलाई करे उसके साथ बुराई करना आप कैसा समझते हैं ?

मौ०—बहुत बुरा।

९३. जि०—आप मौलाना मोहम्मद अली और महात्मा गांधी को जानते हैं ?

मौ०—हां जानता हूं।

९४. जि०—आप कह सकतें हैं कि खिलाफ़त उद्धार के सम्बन्ध में महात्मा गांधी ने कुछ मदद हिन्दुओं से दिलाई ?

मौ०—हां, मैं इस बात को मानता हूं कि महात्मा गांधी ने खिलाफ़त के काम में मुसलमानों को मदद दी।

९५. जि०—मौलाना मोहम्मद अली की एक तक़रीर आपके सामने रक्खी जाती है कृपा करके इसको पढ़ कर सुना दीजिये।

मौ०—इसमें यह लिखा है कि "अगरचे महात्मा गांधी बहुत भले आदमी हैं मगर मैं एक शराबी और जानी (व्यभिचारी) मुसलमान को उनसे अच्छा समझता हूं; क्योंकि वह ईमानदार है"।

९६. जि०—क्या यह इनाम मौलाना की तरफ़ से महात्माजी को उचित दिया गया है ?

मौ०—मैं कुछ नहीं कह सकता इसका जवाब मौलाना मोहम्मद अली से मांगो।

९७. जि०—ईमानदार किसे कहते हैं और बेईमान किसे ?

मौ०—हम मुसलमानों के सिवाय सारी दुनियां के आदमियों को बेईमान समझते हैं, क्योंकि वे काफ़िर हैं।

९८. जि०—काफ़िर शब्द का क्या अर्थ है ?

मौ०—काफ़िर का शब्दार्थ उल्टे रास्ते पर चलने वाला या बाम-मार्गी होता है, परन्तु हम मुसलमान मोहम्मद साहब

के अनुयायियों को छोड़ कर बाक़ी सब आदमियों को काफ़िर कहते हैं, क़लमा पढ़ने से काफ़िर भी मोमिन हो जाते हैं।

९९. जि०—क़लमा किसे कहते हैं ?

मौ०—क़लमें का विवरण और अर्थ पहले आ चुका है अब फिर कहता हूं सुनिये और दोजख़ की आग से बचना चाहते हो तो पढ़ भी लीजिये, "ला इलाह इल अल्लाह मोहम्मद उल रसूल अल्लाह" को क़लमा कहते हैं इसका यह अर्थ है कि खुदा के सिवाय और कोई नहीं है अलबत्ता मोहम्मद साहब खुदा के रसूल हैं।

१००. जि०—रसूल शब्द का क्या अर्थ है ?

मौ०—रसूल का शब्दार्थ दूत या एलची होता है, परन्तु व्यवहार में हम लोग रसूल उसको कहते हैं कि जो खुदा की तरफ़ से धर्मप्रचारार्थ इस दुनियां में भेजे जाते हैं और उनके साथ किताब भी आती है जिसको क़लाम-अल्लाह या ईश्वर-वाणी कहा जाता है।

१०१. जि०—जिस धर्म का प्रचार करने के लिये रसूल खुदा की तरफ से दुनियां में भेजे जाते हैं उसका क्या अर्थ है ?

मौ० धर्म शब्द का अर्थ सच्चा रास्ता या सत्य मार्ग होता है खुदा की यह इच्छा है कि सब आदमी सत्य मार्ग पर चलें।

१०२. जि०—यह कौनसा धर्म है कि जिसके प्रचार के लिये खुदा अपने दूतों को दुनियां में भेजता है ?

मौ०—मुख्य काम रसूलों का यह होता है कि लोगों को इस

बात का विश्वास दिलावें कि खुदा वादहुलाशरीक है अर्थात् ईश्वर एक है और उसका कोई साथी नहीं है।

१०३. जि०—यह सिद्धान्त तो हिन्दुस्तान में मोहम्मद साहब से कई हज़ार वर्ष पहले महर्षि व्यास ने जारी कर दिया था जिसको कि अद्वैतवाद कहा जाता है, इस सिद्धान्त के अतिरिक्त रसूल और किस बात का उपदेश करते हैं ?

मौ०—नमाज़ (ईश्वरभक्ति), रोज़ा (उपवास), जकात (दान) और हज (तीर्थयात्रा) का भी रसूल लोग उपदेश करते हैं।

१०४. जि०—यह शुभ कर्म भी प्रायः प्रत्येक धर्म में माने जाते हैं और किस बात का उपदेश रसूल लोग करते हैं ?

मौ०—इसके सिवाय और मैं कुछ नहीं जानता।

१०५. जि०—सृष्टि की उत्पत्ति से आजतक कितने रसूल खुदा ने दुनियां में भेजे हैं ?

मौ०—मैं ठीक तादाद (संख्या) नहीं जानता, हज़ारों लाखों कहे जाते हैं।

१०६. जि०—अच्छा मुख्य २ रसूलों के नाम बताइये ?

मौ०—मूसा, दाऊद, ईसा और मोहम्मद साहब मुख्य रसूल माने जाते हैं क्योंकि इनके साथ खुदा ने धर्मपुस्तक भी भेजी थी जिनको तौरेत, ज़बर, इञ्जील और कुरान कहते हैं।

१०७. जि०—खुदा बार बार रसूल क्यों भेजता है क्या एक रसूल से काम नहीं चलता ?

मौ०—जिस तरह दुनियां के बादशाह समय समय पर क़ानून बदलते रहते हैं उसी तरह खुदा भी रसूलों को बदलता रहता है।

१०८. जि०—खुदा ने तौरेत, ज़बूर और इञ्जील को क्यों रद कर दिया ?

मौ०—कौन कहता है कि यह धर्मपुस्तक रद होगई मुसलमान अब तक मूसा, दाऊद, और ईसा को खुदा का रसूल और तौरेत, ज़बूर और इञ्जील को खुदा की किताब मानते हैं।

१०९. जि०—आशा है कि आपने शैख़सादी साहब की बोस्तां नामक पुस्तक पढ़ी होगी उसके इस वचन का क्या अभिप्राय है, "न अज़ लातो उज्ज़ा वरआवुर्दे गर्द, कि तौरेतो इञ्जील मनसूख कर्द" ?

मौ०—हां, मैंने बोस्तां पढ़ी है ऊपर के दोहे का यह अर्थ है कि "मोहम्मद साहब ने केवल लात और उज्ज़ा देवियों की मूर्ति को ही नहीं तोड़ा अपितु तौरेत और इञ्जील को भी मंसूख कर दिया"।

११०. जि०—इस वचन के अनुसार मूसा की तौरेत और ईसा की इञ्जील रद हुई या नहीं ?

मौ०—उन धर्म-पुस्तकों को इस कारण रद समझा जाता है कि उनकी सब बातें कुरान में आगई हैं।

१११. जि०—मुसलमान लोग तौरेत के माननेवाले यहूदी और इञ्जील के माननेवाले ईसाइयों को काफ़र क्यों कहते हैं ?

मौ०—इस कारण से कि यहूदी और ईसाई मोहम्मद साहब को खुदा का रसूल और कुरान को खुदा की धर्म-पुस्तक नहीं मानते।

११२. जि०—क्यों नहीं मानते, क्या आपत्ति करते हैं ?

मौ०—यहूदी और ईसाई कहते हैं कि ऐसी कोई बात कुरान में नहीं पाई जाती कि जो तौरेत और इञ्जील में न हो, हमारे नबी मोहम्मद साहब की निस्बत ये काफ़िर कहते हैं कि उन्होंने निर्दोष मुसाफ़िरों और व्यापारियों को लूटा और क़त्ल कराया यह काम नबियों का नहीं है।

११३. जि०—मोहम्मद साहब पर निर्दोष व्यापारियों के लूटने और मरवाने का जो दोष यहूदी और ईसाई लगाते हैं क्या वह निर्मूल है और क्या लूट मार और रक्तपात करने वाला आदमी खुदा का रसूल कहा जा सकता है और क्या लूट मार करना और क़त्ल करना भी धर्म के अन्तर्गत माना जा सकता है ?

मौ०—लूटमार और रक्तपात का जो दोष हमारे नबी साहब पर लगाया जाता है वह बिलकुल निर्मूल है क्योंकि प्रथम तो जो कुछ उन्होंने किया खुदा के हुक्म से किया दूसरे अपनी रक्षा के लिये उनको कुरैश लोगों से लड़ना पड़ा, क्योंकि पहले अत्याचार कुरैश लोगों की तरफ़ से हुए थे।

११४. जि०—ग़िज़्वा और सरिया किसे कहते है ?

मौ०—अरबी भाषा में दोनों का अर्थ काफ़िरों से युद्ध करना होता है भेद इस बात का है कि जिन लड़ाइयों में हमारे नबी साहब खुद शरीक हुए थे उनको ग़िज़्-

बात और जिनमें खुद शरीक न होकर अपने किसी सरदार को भेजा था उनको सरयात करते हैं।

११५. जि०—मदीना पहुंचने के बाद और मृत्यु से पहले मोहम्मद साहब ने १२ वर्ष के भीतर कितने ग़िज़ावात और सरयात किये और कराये ?

मौ०—ठीक गिनती तो याद नहीं है अनुमान सत्तर बहत्तर करे और कराये होंगे।

११६. जि०—आप कहते हैं कि पहले कुरैश लोगों ने छेड़छाड़ की इसलिये मोहम्मद साहब को अपनी रक्षा के लिये उनसे लड़ना पड़ा, आप कह सकते हैं कि वह छेड़-छाड़ क्या थी ?

मौ०—जब हमारे नबी साहब उपदेश करते तो कुरैश उन पर पत्थर फेंकते यहांतक कि उन्होंने खाने पीने की चीज़ों का देना भी बन्द कर दिया और उनकी जान के ग्राहक होगये।

११७. जि०—इससे पहले मोहम्मद साहब ने कुरैश लोगों के धर्म और देवताओं की निन्दा की थी या नहीं ?

मौ०—यह काम खुदा के हुक्म से किया गया था।

११८. जि०—कुरैश लोगों की लड़ाइयों से पहले मोहम्मद साहब के मित्र साद इब्ने अवि विकास ने धर्मचर्चा करते हुए एक कुरैश का शिर फोड़ा था या नहीं ?

मौ०—हां फोडा था, ऐसा करने की हमारे लिये आज्ञा है।

११९. जि०—मौ० अब्दुलक़ादिर बदायूनी कि किताब मुनतखबु-

तवारीख़ आपके सामने रक्खी जाती है इसमें जो बात आपको दिखाई जाती है उसका क्या मतलब है ?

"जितने अहकाम पहले इस्लाम के थे सब अकबर की समझ से बाहर थे। वह कहता था कि अरब के फ़ाकेमस्तों ने जो मुफ़सिद और डाकू थे यह अहकाम वजा किये हैं रफ़ता रफ़ता यह नौबत पहुंची कि अहकामे इस्लाम के बातिल करने के लिये दलील की भी ज़रूरत नहीं रही"।

मौ०—मैं अकबर बादशाह की बात नहीं मान सकता, क्योंकि वह काफ़िर था।

१२०. जि—ईश्वर न्यायकारी है या पक्षपाती ?

मौ०—न्यायकारी है।

१२१. जि०—आप जीव का पुनर्जन्म मानते हैं या नहीं ?

मौ०—नहीं मानते।

१२२. जि०—आप पहले कह चुके हैं कि मोहम्मद साहब ने दुनियां में आने से पहले मोर की शकल में चालीस हज़ार वर्ष तक खुदा की माला फेरी थी। अब आप यह बताइये कि जब मोहम्मद साहब दुनियां में आये तो मोर की सूरत (शरीर) कहां गई और रूह का क्या हुआ ?

मौ०—जहां से आई थी वहीं को चली गई, रूह (आत्मा) दुनियां में आदमी बन कर चली आई।

१२३. जि०—तो क्या मोहम्मद साहब की आत्मा ने मोर का शरीर छोड़ कर आदमी का शरीर धारण किया ?

मौ०—मैं कुछ नहीं कह सकता।

१२४. जि०—मोहम्मद साहब ने कहा है कि मैं सज्जन पिताओं की कमर से धर्मात्मा माताओं के पेट में बदलता हुआ आया हूँ इसका क्या मतलब है क्योंकि पिताओं और माताओं के शब्द बहुवचन हैं ?

मौ०—इसका यह मतलब कि मोहम्मद साहब के पूर्वज बाप, दादा इत्यादि शरीफ़ आदमी थे, चूंकि बात बाप, दादा, पड़दादा और मा. दादी, पड़दादी इत्यादि के सम्बन्ध में कही गई है इसलिये बाप और मा के लिये जमा का सीग़ा (बहुवचन) काम में लाया गया है।

१२५. जि०—मोहम्मद साहब की आत्मा और उनके बाप दादाओं की आत्मा एक थी या जुदी जुदी ?

मौ०—जुदी जुदी।

१२६. जि०—मोहम्द साहब ने जो बात ऊपर कही है वह अपने लिये कही है या बाप दादाओं के लिये ?

मौ०—अपने लिये।

१२७. जि०—फिर सज्जन पिताओं और धर्मात्मा माताओं वाली बात का अर्थ बाप दादाओं के वास्ते कैसे हुआ ?

मौ०—मैं कुछ नहीं कह सकता।

१२८. जि०—तो फिर क्या उस बात का यह मतलब नहीं हो सकता कि मोहम्मद साहब की आत्मा ने कई पिताओं और कई माताओं से जन्म धारण किये थे ?

मौ०—मैं ऐसा नहीं मान सकता।

१२९. जि०—क्यों ?

मौ०—मेरा धर्म आज्ञा नहीं देता।

१३०. जि०—आपको अरब की तवारीख़ दिखाई जाती है। मोहम्मद साहब के चचा अबुतालिब की मृत्यु के समय जब लोगों ने मोहम्मद साहब से पूछा कि आपका दादा अबदुलमतलब कहां है तो उन्होंने क्या जवाब दिया किताब को पढ़कर बताइये ?

मौ०—हज़रत ने फ़रमाया कि दोज़ख (नरक) में है; क्योंकि अबदुलमतलब काफ़िर था।

१३१. जि०—जब मोहम्मद साहब के बाप दादा सज्जन और नेक थे तो अबदुलमतलब दोज़ख में क्यों भेजा गया क्या सज्जन और नेक आदमी भी दोज़ख में भेजे जाते हैं ?

मौ०—सज्जन और नेक होना दूसरी बात है और काफ़िर या मोमिन होना दूसरी बात है।

१३२ जि०—क्या सज्जन और नेक आदमियों को काफ़िर कहना उचित है ?

मौ०—मैं नहीं जानता।

१३३. जि०—जब अबदुलमतलब की मृत्यु के पहले इस्लाम का जन्म ही नहीं हुआ था तो वह मुसलमान कैसे बनता।

मौ०—मैं नहीं जानता ?

१३४. जि०—मोहम्मद साहब की मृत्यु पर अबुबक ने कहा था कि "मैं आशा करता हूं कि खुदा आपको दूसरी बार मरने का कष्ट नहीं देगा" इसका क्या मतलब है क्या मृत्यु कई बार भी हो सकती है जब कि आदमी का जन्म केवल एक बार माना जाय ?

मौ०—मैं नहीं कह सकता ।

१३५. जि०—क्या आप इस बात को मानते हैं या नहीं कि जन्नती मुसलमान पक्षी बन कर बहिश्त के बाग़ में चुगते फिरेंगे ?

मौ०—हां मानता हूँ क्योंकि इस्लाम धर्म ने ऐसा फ़रमाया है ।

१३६. जि०—जब आप पुनर्जन्म को नहीं मानते तो फिर जन्नती लोग आदमी से पक्षी कैसे बन जायेंगे ?

मौ०—मैं नहीं कह सकता ।

१३७. जि०—आप मनसूर, शम्स तबरेज़ और सरमद इत्यादि महात्माओं को कैसा समझते हैं ?

मौ०—यह महात्मा वलीअल्लाह और कामिल फ़कीर थे ।

१३८. जि०—वली अल्लाह और कामिल फ़क़ीरों की बात माननी चाहिये या नहीं ?

मौ०—हां माननी चाहिये ।

१३९. जि०—मुल्ला लोगों ने ऊपर के तीनों फ़कीरों को क़त्ल कराया या नहीं यदि कराया तो किस अपराध में ?

मौ०—हाँ, क़त्ल कराया क्योंकि इन्होंने खुदा के कलाम (कुरान) के ख़िलाफ़ कुफ़्र की बातें कही थीं ।

१४०. जि०—वे कौनसी बातें थीं जो फ़क़ीरों ने कहीं ?

मौ०—मनसूर ने कहा था "अनलहक़ (अहं ब्रह्मास्मि)" जिसका अर्थ यह है कि मैं ही खुदा हूं, शम्स तबरेज़ हिन्दुओं की तरह पुनर्जन्म मानता था जैसा कि उसने कहा है—"गर बिगोयम शरह हाले ख़ेश रा नह सदो हफ़ताद क़ालिब दीदाअम"। जिसका यह मत-

लब है कि मैंने ९७० शरीर धारण किये हैं, इसी तरह सरमद मोमिन और काफिरों को समान समझता था यह सब बात इस्लाम धर्म के विरुद्ध है।

१४१. जि०—क्या कुरान के विरुद्ध चलने वाले आदमी भी वली-अल्लाह और कालिम फ़क़ीर बन सकते हैं ?

मौ०—नहीं बन सकते।

१४२. जि०—फिर मनसूर, शम्स तबरेज़ और सरमद इत्यादि कैसे बन गये ?

मौ०—मैं नहीं जानता।

१४३. जि०—जब खुदा न्यायकारी है तो उसने एक को सुखी, दूसरे को दुःखी, एक को राजा और दूसरे को रङ्क क्यों पैदा किया ?

मौ०—जिस तरह बाग़ का माली शोभा बढ़ाने और अपनी बुद्धि दिखाने के लिये कहीं बड़ा और कहीं छोटा दरख्त बाग में लगाता है उसी तरह खुदा ने अपनी कुदरत दिखाने के लिये किसी को सुखी किसी को दुःखी, किसी को राजा और किसी को रङ्क बना दिया।

१४४. जि०—आप कितने भाई हैं ?

मौ०—चार।

१४५. जि०—यदि आपका बाप बिना कारण के आपको जायदाद में से थोड़ा और आपके भाइयों को बड़ा भाग दें तो आपको बुरा तो नहीं लगेगा, और आप बाप को पक्षपाती तो नहीं कहेंगे ?

मौ०—यह दुनियां की बात है खुदा पर नहीं घट सकती।

१४६. जि०—जब खुदा सब से बड़ा मुनसिफ़ (न्यायाधीश) समझा गया है तो फिर वह पक्षपात की बातें क्यों करता है ?

मौ०—उसकी मरज़ी, मैं नहीं जानता।

१४७. जि०—खुदा सारी दुनियां का बनानेवाला है या उसके एक भाग का ?

मौ०—खुदा सारी दुनियां का कर्त्ता है।

१४८. जि०—काफ़िर किसे कहते हैं और मुसलिम किसे, काफ़िरों का क्या अन्त होगा और मुसलिमों का क्या ?

मौ०—मोहम्मद साहब के अनुयायिओं को मुसलिम और अन्य सारे आदमियों को काफ़िर कहा जाता है, क़यामत के दिन मुसलमान बहिश्त (स्वर्ग) और काफ़िर दोज़ख़ (नरक) में भेजे जायेंगे।

१४९. जि०—काफ़िरों को किसने पैदा किया और मुसलिम को किसने ?

मौ०—दोनों को खुदा ने ही पैदा किया है।

१५०. जि०—यह भेद क्यों रक्खा ?

मौ०—मैं नहीं कह सकता।

१५१. जि०—यदि खुदा सारे काफ़िरों को एक दम मुसलमान बनाना चाहे तो बना सकता है या नहीं ?

मौ०—हां, बना सकता है जैसा कि कहा है।

१५२. जि०—फिर क्यों नहीं बना देता और क्यों बिचारों को

दोज़ख (नरक) में भेज कर नाना प्रकार के कष्ट देता है ?

मौ०—खुदा की मरज़ी।

१५३. जि०—काफ़िरों के सम्बन्ध में मुसलमानों को खुदा की क्या आज्ञा ?

मौ०—या तो मुसलिम बनाओ या जज़िया लो नहीं तो क़त्ल कर डालो।

१५४. जि०—कुरान की इन आयतों का क्या मतलब है "हमने काफ़िरों की आंखों पर पट्टी बांध दी है और उनके हृदय पर मोहर लगादी है इसलिये यदि तुम हज़ार बार भी उनको समझाने की चेष्टा करोगे तो भी वे नहीं मानेंगे क्योंकि जिन आदमियों को खुदा बहका देता है उनको कोई रास्ता नहीं दिखा सकता"।

मौ०—खुदा को अपने काम का अधिकार है जो चाहे सो करे हमको उसके काम में दखल नहीं देना चाहिये।

१५५. जि०—जब आप कहते हैं कि खुदा के बहकाये हुए को कोई मार्ग नहीं दिखा सकता और आदमी को उसके काम को मुसलमान बनाने और न बनाने पर क़त्ल करने की चेष्टा क्यों करते हैं ?

मौ०—ऐसा करना हमारे लिये हजरत (मोहम्मद साहब) का हुक्म है।

१५६. जि०— यह हुक्म खुदा के काम में दख़ल देता है या नहीं ?

मौ०—हजरत ने जो कुछ फरमाया है खुदा के ही हुक्म से फ़रमाया है।

१५७. जि०—यदि आपके पिता आपकी आंखों पर पट्टी बांध कर भागने की आज्ञा दें और जब आप न देख सकने के कारण ठोकर खाकर गिर पड़ें, आपको कोड़ों से पिटवायें तो आप उस बाप को कैसा समझेंगे ?

मौ०—बाप ऐसा काम नहीं कर सकता यदि वह करे तो उसको पागल समझना चाहिये।

१५८. जि०—फिर खुदा आंखो पर पट्टी बांध कर और बहका कर काफ़िरों का मुसलमानों के हाथ से क्यों क़त्ल कराता है ?

मौ०—उसकी मरज़ी में आदमी को दखल देना नहीं चाहिये।

क़यामत और मुक़द्दर

१५९. जि०—आप कहते हैं कि क़यामत के दिन खुदा जीवों का इन्साफ़ करेगा और उनको कर्मों का अच्छा या बुरा फल देगा, मैं यह पूछना चाहता हूँ कि इन्साफ़ कर्मानुसार होगा या उसके विरुद्ध ?

मौ०—इन्साफ़ कर्मानुसार होगा।

१६०. जि०—जब आप कहते हैं कि फल कर्मानुसार मिलेगा तो फिर मोहम्मद साहब की सिफ़ारिश मानकर खुदा उन मुसलमानों को बहिश्त में कैसे भेज सकता है। जिन्होंने पराया धन लूटकर और पराई स्त्री बच्चों को बलपूर्वक दास दासी बनाकर भोग विलास किया हो ?

मौ०—यह काम खुदा मोहम्मद साहब की ख़ातिर करेगा।

१६१. जि०—क्या कर्मों के विरुद्ध ?

मौ०—आदमी कितना ही शुभ काम क्यों न करे, परन्तु जब तक वह मोहम्मदी क़लमा न पढ़े हम उसके कामों को शुभ नहीं कह सकते और खुदा भी उन कामों को अच्छा नहीं समझता।

१६२. जि०—क्या यह खुदा का इन्साफ़ है ?

मौ०—कुछ ही समझ लीजिए हम इसके विरुद्ध कुछ नहीं कह सकते।

१६३. जि०—आदमी कर्म करने में स्वतन्त्र है या खुदा के आधीन अर्थात् आदमी कर्म अपनी इच्छा से करता है या खुदा की आज्ञा से ?

मौ०—खुदा की मरजी से करता है क्योंकि बिना उसकी इच्छा के पत्ता भी नहीं हिल सकता। कुरान शरीफ में लिखा है कि "जब आदमी बुराई करता है तो कहते हैं कि अपनी तरफ़ से है और जब भलाई करता है तो कहते है कि खुदा की तरफ़ से है, तू उनको कहदे कि बुराई और भलाई दोनों खुदा की तरफ़ से हैं।"

१६४. जि० जब बुराई और भलाई दोनों खुदा की तरफ़ से हैं अर्थात् जब आदमी बुरा और भला कर्म खुदा की इच्छा से ही करता है तो फिर खुदा क़यामत के दिन इन्साफ़ किस बात का करेगा क्या अपनी आज्ञा पालन करनेवालों को ही दण्ड देगा ?

मौ०—मैं कुछ जवाब नहीं दे सकता।

१६५. जि०—आप कह चुके हैं कि सृष्टि की उत्पत्ति से कई हजार वर्ष पहले खुदा ने आदमियों की तक़दीर या प्रारब्ध

लिख दी थी अर्थात् यह भी लिख दिया था कि अमुक आदमी ऐसा कर्म करेगा और अमुक ऐसा तो फिर खुदा को इन्साफ़ करने की क्या जरूरत रही ?

मौ०—मैं कुछ नहीं जानता।

१६६. जि०—जब आदमियों का वजूद ही नहीं था तो उनका कर्म या प्रारब्ध कैसे लिखा गया और अमुक अमुक का नाम कैसे लिया जा सकता है ?

मौ०—खुदा अपने संकल्प में आदमियों को पैदा कर चुका था और मन में नाम भी रख चुका था इसलिये मुक़द्दर या प्रारब्ध लिखदी, आदमी की यह ताक़त नहीं है कि खुदा के कामों को जान सके इसलिये आपको उसके काम में तर्क या संदेह से काम नहीं लेना चाहिये।

१६७. जि०—हिन्दू, ईसाई और अन्य धर्मावलम्बी जो काम करते हैं वे किसकी इच्छा से करते हैं ? क्या खुदा की मरजी से नहीं करते ?

मौ०—आदमी किसी मत का अनुयायी क्यों न हो जो कर्म करता है खुदा की इच्छा से करता है।

१६८. जि०—फिर आप उनके कर्मों की निन्दा क्यों करते हैं और क्यों उनको तलवार की धार पर मोहम्मदी क़लमा पढ़ने के लिये मजबूर करते हैं ?

मौ० खुदा की आज्ञा से।

१६९. जि०—काफ़िर जो आपकी बात न मान कर मुसलमान नहीं बनते, किसकी आज्ञा से नहीं बनते ?

मौ०—खुदा की आज्ञा से।

१७०. जि०—एक तरफ़ तो खुदा मुसलमानों को यह कहता है कि काफ़िरों को मोमिन बनाओ और दूसरी तरफ़ काफ़िर से कहता है कि मोहम्मदी मत बनो, यहां तक कि उनकी आंखों पर पट्टी बांध कर हृदय पर मोहर लगा देता है, भला यह तो बताइये कि खुदा ऐसी विरुद्ध बातें क्यों करता है जिसको पढ़ कर हंसी आती है।

मौ०—मैं कुछ नहीं जानता।

१७१. जि०—सब आदमियों की बुद्धि, स्वभाव और बिश्वास समान रीति का है या जुदा जुदा ?

मौ०—जुदा जुदा है।

१७२. जि०—जुदा जुदा होने का क्या कारण है ?

मौ०—खुदा की मरज़ी।

१७३. जि०—खुदा सब की बुद्धि और विश्वास को समान करना चाहे तो कर सकता है या नहीं ?

मौ०—क्यों नहीं कर सकता।

१७४. जि०—जब आदमियों की बुद्धि और विश्वास खुदा ने ही जुदे २ बनाये हैं और वह शक्ति रखता हुआ भी सब को समान करना नहीं चाहता तो फिर आप तलवार की धार पर लोगों को विश्वास क्यों बिगाड़ते हैं ?

मौ०—हम तलवार की धार पर किसी का ईमान नहीं बदलते।

१७५. जि०—मैं आपके सामने कई पुस्तकें रखता हूं इनको पढ़ कर कहिये कि मुसलमानों ने लोगों के गले पर छुरी रख कर उनका धर्म भ्रष्ट किया या नहीं ?

मौ०—यह सब पुस्तकें ईसाई लोगों की लिखी हुई हैं, उन्होंने इस्लाम को बदनाम करने के लिये प्रमाण के विरुद्ध लिख डाला कि मुसलमानों ने तलवार की धारत पर लोगों को कलमा पढ़ाया।

१७६. जि०—क्या अबुल फ़िदा, इब्ने खलदून, उमर इब्ने वाक़दी और फ़रिश्ता इत्यादि भी ईसाई थे ? और क्या इन्होंने भी इस्लाम को बदनाम करने के लिये असत्य लिख डाला ? और क्या कुरान में तलवार की धार पर आदमियों को मुसलमान बनाने की आज्ञा नहीं है ?

मौ०—यह आदमी मुसलमान थे, इनकी किताबों में और कुरान शरीफ़ में अगर लिखा हुआ मिल जाय कि मुसलमान बलपूर्वक दूसरों को इस्लाम धर्म का अनुयायी बनाते हैं तो मैं मान लूंगा।

१७७. जि०—उमर इब्ने वाक़दी की किताब "मग़ाज़ी उल रसूल" आपको दिखाई जाती है इसमें निम्नलिखित बात का क्या मतलब है ? "बदर के युद्ध से विजयी होकर जब मोहम्मद साहिब मदीना पहुंचे तो बहुत से आदमियों की तरफ़ से जो लड़ाई में मोहम्मद साहब के साथ नहीं गये थे उसीद इब्ने हमीर ने कहा कि हमारा आपके साथ इस कारण से जाना नहीं हुआ कि आप हमारे विचार में व्यापारियों को लूटने के लिये गये थे जिहाद के लिये नहीं गये,

यदि हमको यह मालूम होता कि आप जिहाद के लिये जाते हैं तो हम जरूर आपके साथ चलते," उसीद की बात सुन कर मोहम्मद साहिब ने जवाब दिया कि "आपका विचार बिलकुल ठीक है निःसंदेह मैं काफ़िले को लूटने के लिये गया था।"

मौ०—इससे तो यही साबित होता है कि मोहम्मद साहिब ने काफ़िलों को लुटवाया।

१७८. जि०—ऊपर की किताब में मक्का के विजय की घटना निकाल कर पढ़िये और बतलाइये कि इसका क्या मतलब है? "मोहम्मद साहिब के मक्का में प्रवेश करते ही अकमा इब्ने अबी जहल भाग निकला, हजरत ने ११ मनुष्य और ६ स्त्रियों के बध की आज्ञा दी परन्तु उनमें ७ आदमी और २ स्त्रियों ने इस्लाम धर्म अङ्गीकार कर लिया इसलिये उनको छोड़ दिया गया बाक़ी चार मर्द और ४ औरतों का सिर काटा गया क्योंकि उन्होंने इस्लाम क़बूल नहीं किया।"

मौ०—बेशक यह काम बहुत बुरा है।

१७९. जि०—तारीख़ फ़रिश्ता आपके सामने रक्खी जाती है इस में अलाउद्दीन ख़िलजी का हाल पढ़कर बतइये कि उससे क्या नतीजा निकलता है?

"हिन्दुओं का नाम ख़िराजगुज़ार या करदाता है, जब मुसलमान हाकिम उनसे चांदी मागें तो उनको कुछ आपत्ति नहीं करनी चाहिये और बड़ी आधीनता के साथ हाथ जोड़ कर हाकिम को चांदी की जगह सोना भेंट करना चाहिये, यदि हाकिम उनके मुँह

में गंदगी डालना चाहें या थूकना चाहें तो हिन्दुओं को शांति के साथ हाकिमों की गंदगी और थूक को ओटने के लिये अपने मुँह खोल देने चाहियें क्योंकि खुदा ने हिन्दुओं को महानीच और घृणित बनाया है, खुदा का हुक्म है कि हिन्दुओं को गुलाम बनाये रक्खो हिन्दुओं को नीच अवस्था में रखना मुसलमानों के लिये धार्मिक आज्ञा है, क्योंकि वे रसूले खुदा (मोहम्मद सा०) के बड़े कट्टर शत्रु हैं। क़ाज़ी ने यह भी कहा कि आप की बादशाहत में काफ़िर हिन्दुओं की ऐसी बुरी हालत होगई है कि उनके स्त्री, बच्चे मुसलमानों के द्वार पर भीख मांगते फिरते हैं इस शुभ काम के लिये अगर खुदा आपको बहिश्त नसीब न करे तो मैं ज़िम्मेवार हूं?

मौ०—ऐसी बातें सुनकर मुझे बड़ी शर्म आती है और मैं कुछ उत्तर नहीं दे सकता।

१८०. जि०—तारीख़फ़रिश्ता में अमीर तैमूर का हाल पढ़ कर आप क्या राय देते हैं?

"मूर्त्तिपूजक काफ़िरों को मार कर ग़ाज़ी कहलाने के लिये तैमूर ने हिन्दुस्तान पर आक्रमण करने का विचार किया, सब से पहले इस काम के लिये क़ुरान से शकुन लिया गया, जब उसको खोल कर नियत स्थान से पढ़ा गया तो इस प्रकार लिखा हुआ मिला—"ऐ पैग़म्बर काफ़िर और मूर्त्तिपूजकों के साथ युद्ध करके उनको क़तल कर" इसके पश्चात् ९२००० सवार अपने सामने बुलाये और तैमूर ने उनसे कहा—"आप लोग जानते हैं कि हिन्दुस्तान के आदमी मूर्त्ति और सूर्य की पूजा करने वाले काफ़िर हैं, खुदा और रसूले खुदा (मोहम्मद साहब) का मुसलमानों के लिये हुक्म है कि ऐसे काफ़िरों को क़तल करें इसलिये मेरा इरादा है कि हिन्दुस्तान पर जिहाद के लिये चढ़ाई करूं क्योंकि इस अवस्था में आप लोग या तो काफ़िरों को मुसलमान बना सकेंगे या उनको क़तल

करके मन्दिर और मूर्तियों को तोड़ने फोड़ने का शुभ अवसर प्राप्त करके ग़ाज़ी और मुजाहिद बन कर ख़ुदा को राजी कर सकेंगे और जो इनाम ग़ाज़ियों के लिये ख़ुदा ने मुक़र्रर किया है, उसको पा सकेंगे'' तैमूर का भाषण सुन कर सिपाहियों ने कहा—"आमी अल्ला (बहुत अच्छा)" सिपाहियों की मरज़ी देख कर तैमूर सवार लेकर हिन्दुस्तान की तरफ़ बढ़ा, और आते ही दिसम्बर सन् १९३८ में भटनेर के स्थान पर (बीकानेर राज्य के अन्तर्गत) एक घन्टे में १०००० हिन्दुओं के टुकड़े टुकड़े कर डाला ॥"

भटनेर के तैमूर दिल्ली की तरफ़ बढ़ा और पहुँचते ही एक लाख हिन्दुओं का शिर काट कर फीरोज़शाही मसजिद में ईद मनाई, साथ ही अपने सिपाहियों को लूट मार करने और हिन्दुओं के क़तल करने की आज्ञा दे दी, बहुत से हिन्दू आस पास के गांवों मे भाग कर इस निमित्त दिल्ली में आ गये थे कि वहां बादशाह के सामने सिपाही उनको नहीं मार सकेंगे। तैमूर ने जब देखा कि यह शिकार घर बैठे आ गया तो वह बहुत खुश हुआ और उसने सिपाहियों को हुक्म दिया कि यदि यह काफ़िर कलमा न पढ़ें तो इन को जहन्नुम वासिल करदो (क़तल करदो) यहां तक कि जितने जितने हिन्दू हाथ लगे सिपाहियों में क़तल करने के लिये बांट दिये गये, 'तुजक तैमूरी' नामक पुस्तक में लिखा है कि प्रत्येक सिपाही के हिस्से में १५ हिन्दू आये और मारे गये, एक मुसलमान फ़कीर, जिसका नाम नसीरउद्दीन उमर था तैमूर के साथ समरकंद बुखारा से चला आया था इसने अपनी उमर में चिड़िया भी नहीं मारी थी, इसके हिस्से में भी १५ हिन्दू आये जिनको फ़कीर साहब ने अपने हाथ से क़त्ल किया।

दिल्ली की ईंट से ईंट बजाकर और लाखों हिन्दुओं को यमपुर भेजकर ग़ाज़ी साहब मेरठ तशरीफ़ ले गये। वहां पहुँचते ही

हिन्दुओं का सिर काटना आरम्भ कर दिया, एक को भी जीवित नहीं छोड़ा, जवान स्त्री और बच्चों को क़ैदी कर लिया, प्रत्येक सिपाही के भाग में बीस में से लेकर १०० तक क़ैदी आये। इससे पाया जाता है कि ५०००००० हिन्दू स्त्री और बच्चे क़ैद किये गये मेरठ को उजाड़ कर तैमूर हरद्वार गया वहां गंगा को यात्रियों के खून से लाल कर दिया, यहां तक की पानी की जगह खून बहने लगा। जब यह काम हो चुका तो तैमूर ने पृथ्वी पर पड़ कर खुदा को धन्यवाद दिया कि जिस काम के लिये हिन्दुस्तान में आया था वह पूरा होगया। तैमूर ने कहा कि मैं दो काम के लिये हिन्दुस्तान में आया था। एक तो हिन्दुओं को मार कर बहिश्त में जाने के लिये, दूसरे उनका धन दौलत लूटने के लिये क्योंकि मुसलमानों के लिये काफ़िरों का माल मां के दूध के समान है। जब कि काफ़िरों का माल हमारे लिये खुदा ने हलाल बना दिया है तो हमको चाहिये कि इस कृपा के बदले खुदा को धन्याद दें। मैंने लाखों हिन्दुओं को दोजख़ की आग में फेंक दिया है, मेरे साथी मुसलमान काफ़रों के धन दौलत से मालामाल होगये हैं इस से अच्छा मेरे लिये और क्या हो सकता है।"

मौ०—मैं क्या जवाब दूं कुछ नहीं कह सकता।

१८१. जि०—क्या निर्दोष छोटे २ बच्चों को दीवार में जीवित गड़वा देना जन्नत में जाने के लिये सहायता दे सकता है?

मौ०—इसलाम में स्त्री और बच्चों को मारने का हुक्म नहीं है।

१८२. जि०—श्रीमान् गुरु गोविंदसिहजी के पुत्र ज़ोरावरसिंह और फतेसिंह को वाज़ीदखां सूबेदार सरहिंद ने जिन्दा दीवार में चिनाया या नहीं? आप कह सकते हैं कि कि उस समय ज़ोरावरसिंह और फतेसिह की क्या उमर थी?

मौ०—हां पंजाब की तवारीख़ को देखने से पाया जाता है कि वाज़ीदखां ने उपरोक्त दो बच्चों को, जिनकी उमर ९ और ७ वर्ष की थी, ज़िन्दा दीवार में चुनवा दिया परन्तु यह काम वाज़ीदखां का था, इस्लाम का उससे कुछ सम्बन्ध नहीं है।

१८३. जि०—क्या इस्लामी बादशाह की तरफ से वाज़ीदखां को कुछ सज़ा दी गई?

मौ०—कुछ नहीं।

१८४. जि०—सिलायकोट के खत्री बाघसिंह का लड़का हक़ीकतराय क्यों कत्ल कराया गया?

मौ०—उस काफिर ने हज़रत रसूल अल्लाह मोहम्मद साहिब की साहबज़ादी फातिमा को बुरा भला कहा था इसलिये उसका शिर काटा गया।

१८५. जि०—क्या मुसलमान लड़कों ने सतीशिरोमणी सीताजी पर कलंक नहीं लगाया था? और उन लड़कों को क्या सज़ा दी गई?

मौ०—लगाया होगा, सज़ा इसलिये नहीं दी गई कि कफ़िरों को सताने के लिये मुसलमानों का कोई कर्म बुरा नहीं समझा जाता।

१८६. जि०—औरंगज़ेब बादशाह ने गुरु तेग़बहादुर का शिर क्यों कटाया? भाई मनीराम को आरे से क्यों चिराया और भाई दयाला को उबलते हुए तेल में क्यों तलाया?

मौ०—इसलिये कि यह काफ़िर बादशाह के कहने पर भी मुसलमान नहीं बने थे।

१८७. जि०—तो क्या इन कामों से यह साबित नहीं होता कि

इस्लाम ने तलवार की धार पर लोगों को मोहम्मदी क़लमा पढ़ाने की आज्ञा दी है।

मौ०—हां उनसे तो ऐसा ही साबित होता है।

१८८. जि०—आदमी को किसी धर्म का अनुयायी सोच विचार कर होना चाहिये या अंधविश्वास के साथ ?

मौ०—सोच विचार कर होना चाहिये।

१८९. जि०—जिस धर्म के सिद्धान्त बुद्धि से बाहर हों वह मानने लायक है या नहीं।

मौ०—मानने योग्य नहीं है।

१९०. जि०—क्या इस्लाम को मानने से खुदा अन्यायी, हठधर्मी, पक्षपाती, एकदेशी, सिफारिश मानने वाला, आंखों पर पट्टी बांधने वाला, दिल पर मोहर रखने वाला, बहकाने वाला और अपनी इच्छा पर पैदा किये हुए आदमियों को मुसलमानों के हाथ से क़त्ल कराने वाला साबित नहीं होता ?

मौ०—हां होता है, परन्तु यह खुदा का काम है।

१९१. जि०—जिस धर्म में ईश्वर पर कलंक न लगे और वह निष्पक्ष न्यायकारी, साबित हो सके उसके मानने में क्या हानि है ?

मौ०—कुछ हानि नहीं है।

१९२. जि०—आप अपना नाम अबदुर्रहमान चौहान क्यों लिखते है ?

मौ०—मेरे पूर्वज किसी समय हिन्दू चौहान थे इसलिये हमारे कुटुम्ब के सब आदमी अपने को चौहान लिखते है।

१९३. जि०—आपके पूर्वज कब मोहम्मदी बने और क्यों ?

मौ०—जब औरंजेब बादशाह ने मथुरा में कृष्ण का मन्दिर तोड़ कर मस्जिद बनवाई नगर के आदमियों से कहा कि या तो मुसलमान हो जाओ वरना क़त्ल किये जाओगे हज़ारों आदमी भाग २ कर महाराणा राजसिंह की शरण में उदयपुर चले गये बाकी जो मुसलमान नहीं बने क़त्ल कर दिये गये। हमारे वंश में ११ आदमी जान से मारे गये जब केवल १ आदमी बचा तो मां के कहने पर इस कारण से मुसलमान बन गया कि कुल का नाम नष्ट न होने पावे।

१९४. जि०—जब आप कहते है कि बुद्धि से बाहर बातों को नहीं मानना चाहिये और जिस धर्म में ईश्वर को न्याय-कारी, सत्य का प्रेमी और कर्मानुसार फल देनेवाला माना जाय उसको अङ्गीकार करना चाहिये तो फिर आप अपने बाप दादाओं के पवित्र वैदिकधर्म को क्यों नहीं स्वीकार करते ?

मौ०—मैं और मेरे बहुत से भाई वैदिकधर्म मानना चाहते है परन्तु राजपूत लोग हमको समाज में नहीं लेते।

१९५. जि०—कौन कहता है कि नहीं लेते ? अब शुद्धि का मार्ग खुल गया है और सरकार अङ्गरेजी के रामराज्य में जिहादी तलवार का डर भी नहीं है ?

मौ०—यदि आप निश्चय करादें कि राजपूत बिरादरी हम को मिलाने के लिये तय्यार है तो हम हज़ारों अदमी शुद्ध हो जायंगे।

१९६. जि०—कल आप अपने मुखियाओं को लेकर मेरे पास चले आयें फिर जैसा उचित हो करना।

जिज्ञासु की बात सुनकर मौलवी साहब अपने घर चले गये और थोड़ी देर पीछे बहुत से आदमियों को साथ लेकर जिज्ञासु के पास चले आये और राजपूत समाज में चलने के लिये कहा। जिज्ञासु मौलवी साहब और उनके वंशधरों को साथ लेकर क्षत्रिय महासभा में गया और कहा कि यह लोग शुद्ध होना चाहते है, सभा ने मौलवी साहब और उनके साथियों से पूछा कि "क्या आप अपनी इच्छा से मौहम्मदी धर्म को छोड़ कर सनातनी बनना चाहते हैं ? क्या आपकी शुद्धि की जाय ?" मौलवी साहब और उनके साथियों ने जवाब दिया कि हम इस शर्त के साथ शुद्ध होना चाहते है कि राजपूत समाज में हमारे साथ समानता का वर्ताव किया जाय इस पर राजपूत समाज ने कहा कि 'हम वेद, ईश्वर और धर्म को साक्षी मान कर प्रतिज्ञा करते है कि जो भाई मोह-म्मदी शासन काल में तलवार की धार पर आर्य धर्म से भ्रष्ट किये गये थे उनको शुद्ध होने पर सनातन धर्म में मिला लेवेंगे और उनके साथ रोटी बेटी का सम्बन्ध कर दिया जायगा।' समाज के विश्वास दिलाने पर मौलवी साहब और उनके साथी मारे आनन्द के उछलने लगे और बोले कि हमारी तत्काल शुद्धि करली जाय उनके मुंह से इन शब्दों का निकलना था कि 'स्वाहा-स्वाहा' के शब्द ने पृथ्वी और आकाश को गुंजा दिया जब शास्त्रानुसार इनकी शुद्धि होगई राजपूत समाज ने शुद्ध भाईयों के हाथ से भोजन बनवा कर खाया, साथ ही उनके साथ विवाह सम्बन्ध भी कर दिया गया।

मौ०—हां पंजाब की तवारीख़ को देखने से पाया जाता है कि वाज़ीदखां ने उपरोक्त दो बच्चों को, जिनकी उमर ९ और ७ वर्ष की थी, ज़िन्दा दीवार में चुनवा दिया परन्तु यह काम वाज़ीदखां का था, इस्लाम का उससे कुछ सम्बन्ध नहीं है।

१८३. जि०—क्या इस्लामी बादशाह की तरफ से वाज़ीदखां को कुछ सज़ा दी गई?

मौ०—कुछ नहीं।

१८४. जि०—सिलायकोट के खत्री बाघसिंह का लड़का हक़ीकतराय क्यों कत्ल कराया गया?

मौ०—उस काफ़िर ने हज़रत रसूल अल्लाह मोहम्मद साहिब की साहबज़ादी फातिमा को बुरा भला कहा था इसलिये उसका शिर काटा गया।

१८५. जि०—क्या मुसलमान लड़कों ने सतीशिरोमणी सीताजी पर कलंक नहीं लगाया था? और उन लड़कों को क्या सज़ा दी गई?

मौ०—लगाया होगा, सज़ा इसलिये नहीं दी गई कि काफ़िरों को सताने के लिये मुसलमानों का कोई कर्म बुरा नहीं समझा जाता।

१८६. जि०—औरंगज़ेब बादशाह ने गुरु तेग़बहादुर का शिर क्यों कटाया? भाई मनीराम को आरे से क्यों चिराया और भाई दयाला को उबलते हुए तेल में क्यों तलाया?

मौ०—इसलिये कि यह काफ़िर बादशाह के कहने पर भी मुसलमान नहीं बने थे।

१८७. जि०—तो क्या इन कामों से यह साबित नहीं होता कि

इस्लाम ने तलवार की धार पर लोगों को मोहम्मदी क़लमा पढ़ाने की आज्ञा दी है।

मौ०—हां उनसे तो ऐसा ही साबित होता है।

१८८. जि०—आदमी को किसी धर्म का अनुयायी सोच विचार कर होना चाहिये या अंधविश्वास के साथ ?

मौ०—सोच विचार कर होना चाहिये।

१८९. जि०—जिस धर्म के सिद्धान्त बुद्धि से बाहर हों वह मानने लायक है या नहीं।

मौ०—मानने योग्य नहीं है।

१९०. जि०—क्या इस्लाम को मानने से खुदा अन्यायी, हठधर्मी, पक्षपाती, एकदेशी, सिफारिश मानने वाला, आंखों पर पट्टी बांधने वाला, दिल पर मोहर रखने वाला, वहकाने वाला और अपनी इच्छा पर पैदा किये हुए आदमियों को मुसलमानों के हाथ से क़त्ल कराने वाला साबित नहीं होता ?

मौ०—हां होता है, परन्तु यह खुदा का काम है।

१९१. जि०—जिस धर्म में ईश्वर पर कलंक न लगे और वह निष्पक्ष न्यायकारी, साबित हो सके उसके मानने में क्या हानि है ?

मौ०—कुछ हानि नहीं है।

१९२. जि०—आप अपना नाम अब्दुर्रहमान चौहान क्यों लिखते है ?

मौ०—मेरे पूर्वज किसी समय हिन्दू चौहान थे इसलिये हमारे कुटुम्ब के सब आदमी अपने को चौहान लिखते है।

१९३. जि०—आपके पूर्वज कब मोहम्मदी बने और क्यों ?

मौ०—जब औरंजेब बादशाह ने मथुरा में कृष्ण का मन्दिर तोड़ कर मस्जिद बनवाई नगर के आदमियों से कहा कि या तो मुसलमान हो जाओ वरना क़त्ल किये जाओगे हज़ारों आदमी भाग २ कर महाराणा राजसिंह की शरण में उदयपुर चले गये बाकी जो मुसलमान नहीं बने क़त्ल कर दिये गये। हमारे वंश में ११ आदमी जान से मारे गये जब केवल १ आदमी बचा तो मां के कहने पर इस कारण से मुसलमान बन गया कि कुल का नाम नष्ट न होने पावे।

१९४. जि०—जब आप कहते है कि बुद्धि से बाहर बातों को नहीं मानना चाहिये और जिस धर्म में ईश्वर को न्यायकारी, सत्य का प्रेमी और कर्मानुसार फल देनेवाला माना जाय उसको अङ्गीकार करना चाहिये तो फिर आप अपने बाप दादाओं के पवित्र वैदिकधर्म को क्यों नहीं स्वीकार करते ?

मौ०—मैं और मेरे बहुत से भाई वैदिकधर्म मानना चाहते है परन्तु राजपूत लोग हमको समाज में नहीं लेते।

१९५. जि०—कौन कहता है कि नहीं लेते ? अब शुद्धि का मार्ग खुल गया है और सरकार अङ्गरेज़ी के रामराज्य में जिहादी तलवार का डर भी नहीं है ?

मौ०—यदि आप निश्चय करादें कि राजपूत बिरादरी हम को मिलाने के लिये तय्यार है तो हम हज़ारों आदमी शुद्ध हो जायंगे।

१९६. जि०—कल आप अपने मुखियाओं को लेकर मेरे पास चले आयें फिर जैसा उचित हो करना।

जिज्ञासु की बात सुनकर मौलवी साहब अपने घर चले गये और थोड़ी देर पीछे बहुत से आदमियों को साथ लेकर जिज्ञासु के पास चले आये और राजपूत समाज में चलने के लिये कहा। जिज्ञासु मौलवी साहब और उनके वंशधरों को साथ लेकर क्षत्रिय महासभा में गया और कहा कि यह लोग शुद्ध होना चाहते हैं, सभा ने मौलवी साहब और उनके साथियों से पूछा कि "क्या आप अपनी इच्छा से मोहम्मदी धर्म को छोड़ कर सनातनी बनना चाहते हैं ? क्या आपकी शुद्धि की जाय ?" मौलवी साहब और उनके साथियों ने जवाब दिया कि हम इस शर्त के साथ शुद्ध होना चाहते है कि राजपूत समाज में हमारे साथ समानता का वर्ताव किया जाय इस पर राजपूत समाज ने कहा कि 'हम वेद, ईश्वर और धर्म को साक्षी मान कर प्रतिज्ञा करते है कि जो भाई मोहम्मदी शासन काल में तलवार की धार पर आर्य धर्म से भ्रष्ट किये गये थे उनको शुद्ध होने पर सनातन धर्म में मिला लेवेंगे और उनके साथ रोटी बेटी का सम्बन्ध कर दिया जायगा।' समाज के विश्वास दिलाने पर मौलवी साहब और उनके साथी मारे आनन्द के उछलने लगे और बोले कि हमारी तत्काल शुद्धि करली जाय उनके मुंह से इन शब्दों का निकलना था कि 'स्वाहा-स्वाहा' के शब्द ने पृथ्वी और आकाश को गुंजा दिया जब शास्त्रानुसार इनकी शुद्धि होगई राजपूत समाज ने शुद्ध भाइयों के हाथ से भोजन बनवा कर खाया, साथ ही उनके साथ विववाह सम्बन्ध भी कर दिया गया।

आर्य साहित्य मण्डल लिमिटेड अजमेर

की ओर से

वैदिक-स्वाध्याय प्रेमियों

को

एक अपूर्व नई भेंट

वैदिक अध्यात्म सुधा

लेखक

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान्

श्री प्रियरत्नजी आर्ष [ब्रह्ममुनि

सुन्दर गेटअप आकर्षक व स

मूल्य केवल ॥)

आर्य

"मण्डल" का प्रकाशित साहित्य

महर्षि कृत ग्रन्थों के सस्ते व सुलभ संस्करण

सत्यार्थप्रकाश	१)	सजिल्द	१॥)
संस्कारविधि	।=)	,,	॥।)
ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका	१)	,,	१॥)
व्यवहारभानु	=)॥	गोकरुणानिधि	=)
पंचमहायज्ञविधि	–)	हवनमन्त्राः	)॥
आर्य्योद्देश्यरत्नमाला	)॥	नित्यकर्मविधि	)॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती का प्रामाणिक जीवनचरित्र
(२ भागों में) सजिल्द १०) (प्रथम भाग छप रहा है)

वैदिक मनोविज्ञान	।)
नव उपनिषदों का सरल हिन्दी भाष्य सजिल्द	१॥।)
पुरुषार्थप्रकाश	१।)
भारतीय समाजशास्त्र	(छप रहा है)
चरक संहिता हिन्दी अनुवाद ३ भाग	१५) नेट
(,, प्रथम भाग छप रहा है)	
स्वाध्याय कुसुमांजलि	॥।)
आर्य्य जीवन गृहस्थ धर्म	।=)
कर्त्तव्य दर्पण	१।)

पुस्तकें मिलने का पता—

आर्य्य साहित्य मण्डल लि०, अजमेर.

Printed at the Fine Art Printing Press, Ajmer